ओ३म्

कुरान खुदाई कैसे ?

कुरान को पढ़ने से स्पष्ट हो जाता है कि उसका निर्माण मनुष्य मात्र के कल्याण के लिए नहीं हुआ। उसका उद्देश्य केवल मक्का और उसके आस पास के लोगों को डरा धमका कर तथा वहिश्त के लुभावने दृश्य दिखाकर ह० मुहम्मद साहब के नये मजहब इस्लाम में लाने के लिए था। इस विषय में अनेक प्रमाण कुरान में मिलते हैं। हम कुछ प्रमाण यहां देते हैं। जिनसे पाठक समझ सकेंगे कि कुरान ईश्वरीय ग्रन्थ के रूप में मान्यता प्राप्त करने का अधिकारी है या नहीं।

कुरान मक्का वालों के लिये था

"और ऐ पैगम्बर! हमने इस (कुरान) को इस वजह से उतारा है कि तुम मक्का वालों को और जो लोग उसके आस पास रहते हैं उनको डराओ ६२ कु०पा० सू अनआम रु० ११ ॥

... दिये गये हैं जो निम्न
है ... मक्के के रहने वालों
औ ... इन
की
... हने
वा
भ
न
इ
१
तो ... अब तुम्हारे पास

ओ३म
गुरु विरजानन्द दण्डी
संदर्भ पुस्तकालय
दयानंद महिला महाविद्यालय
कुरुक्षेत्र
5328
वर्गीकरण नम्बर ....
पु. परिग्रहण क्रमांक ....

* ओ३म् *

खण्डन मण्डन ग्रन्थमाला पुष्प सं० ७४

कुरान खुदाई कैसे ?

ग्रन्थकार

'खण्डन मण्डन ग्रन्थ माला' के समस्त

ग्रन्थों के यशस्वी प्रणेता

आचार्य डा० श्रीराम आर्य

कासगंज (उ० प्र०)

प्रकाशक

वैदिक साहित्य प्रकाशन

कासगंज (उ० प्र०) भारतवर्ष

	दयानन्दाब्द १५७	
प्रथमवार	सृष्टि संवत् १९७२९४९०७८	मू० ६५ पै०
२०००	सन् १९७७ ई०	

गुरु विरजानन्द ...
... पुस्तकालय
... परिग्रहण क्रमांक ... 5328
दयानन्द महिला मह...

दलील उपदेश और दया (कुरान) आ गयी है। १५७। कु सू अनआमरु २०

"अगर हम उस कुरान को किसी दूसरी जबान वाले पर उतारते। १९२। और वह उसे इन (अरब) वालों को पढ़ कर सुनाते तो वह उस पर ईमान लाते।" पा १९ सू शुअरा रु ११।

"हमने इस कुरान को अरबी भाषा में उतारा ताकि तुम समझ सको।" ।पा। १२ सू यूसुफ। उपरोक्त प्रमाण साबित करते हैं कि कुरान केवल मक्का या अरब वालों के ही लिये, मुशरकीन लोगों के लिए बनाया गया था न कि दुनिया भर के मनुष्यों के लिए बना था अतः खुदाई नहीं है।

कुरान में संशोधन हुए हैं

(अरबी खुदाने कहा) जब हम एक आयत को बदल कर उसकी जगह दूसरी आयत उतारते हैं तो जो हुक्म उतरता है उसको वही बखूबी जानता है कु० पा० १४ सू नहल। १४ आ १०१।

"हम कोई आयत मंसूख करदें या उसको बुद्धि से उतारदें तो उससे अच्छी या वैसी ही पहुँचा देते हैं। क्या तुम को मालूम नहीं कि अल्लाह हर चीज पर शक्तिशाली है।" कु सू बकर रु १३ आ० १०६।।

पहिली हा... में जो कुरान की आयतें उतरी थीं उनमें भारी संशोधन हुआ है कितनी ... आयतें बिलकुल निकाल डाली गई और कितनी ही बदल कर नई जोड़ ... गई हैं। अतः मौजूद कुरान असली कुरान नहीं रह जाता है। यह कुरान के ... अनुसार संशोधित कुरान है। आश्चर्य है कि अरबी अल्लाह मियां को भी ... बातों में हेरा फेरी करनी पड़ती थी। वह एक दम सही बात को भी पहि... बार में नहीं कह सकता था इससे कुरान की प्रमाणिकता संदिग्ध है। ... ई नहीं हो सकती है।

...ी कुरान लोहे महफूज पर लिखा है।

बल्कियह कुरान बड़ी शान का है। २१। लोह महफूज पर लिखा गया है। २२ "कु० पा० ३० सू बुरूज"

हमने इसको अरबी में बनाया है ताकि तुम समझो । ३ । और यह कुरान हमारे यहाँ असल किताब में बड़े पाये की हिकमत कीहै ।४। पा २५ सू जुखरुफ

" फिर हमने कुरान को समझने के लिए आसान कर दिया है तो कोई है जो शिक्षा पकड़े । कु पा २७ सू कमर रु २ ।।

इन प्रमाणों के अनुसार खुदा ने असली कुरान किसी अन्य भाषा में अपने पास यादश्त या पढ़ने के लिए किसी बड़ी किताब जिसे लोहे महफूज (लोहे की तख्ती) पर लिख कर रख लिया है वह किसी अन्य भाषा में कठिन शब्दों में लिखा है । उस कुरान को सरल बना कर अरबी में मुहम्मदके द्वारा अरब के लोगों को डराने के लिये उतार दिया है ताज्जुब इस बात का है कि अपने असल कुरान में से नकल कराने में भी खुदा को बार २ संशोधन कराने पड़े हैं । खुदा की इल्मी योग्यता पर नकल करने में भी भूलें होना संतोषजनक हैं । इससे यह भीस्पष्ट हो गया कि असली कुरान खुदा के पास है और उसकी नकल यह कुरानहै तथा ज्यों का त्यों होकर यह भी संशोधित है । अतः खुदाई नहीं । खुदाई किताब से कभी बेशी सम्भव नहीं हो सकती है ।

यह असली कुरान नहीं है

कुरान जब बनना प्रारम्भ हुआ था तब अरब में और लोगों ने भी कुरान बनाने प्रारम्भ किये थे । तब इस कुरान के असली होने को जांचने के लिये दो कसौटियां इसमें लिखी गई थीं जो इस प्रकार हैं —

" ऐ पैगम्बर ! अगर हमने यह कुरान किसी पहाड़ पर उतारा होता तो तू देखता कि वह खुदा के डर के मारे झुक गया और फट गया होता । हम यह मिसाल लोगों के लिये फरमाते है ताकि वह सोचें । २१ । कु पा २२ सु हशर रु ३ ।।

यही बात और मजबूती के साथ अन्यत्र इस प्रकार लिखी गई है—

"और अगर कोई कुरान ऐसा होता जिससे पहाड़ चलने लगते और उससे जमीन के टुकड़े हो सकते या उससे मुर्दे जी उठें और बोलने लगें तो वह यही होता ।" ३१ । कु पा १३ सु राद रु ४ ।

इस कसौटी के अनुसार परीक्षा करने पर कुरान रखने से न तो पहाड़ झुकते हैं न चलने लगते हैं, न ज़मीन के टुकडे हो पाते हैं वल्कि कोई मुर्दा भी जिन्दा नहीं होता है—तब यह कुरान तो असली कुरान नहीं माना जा सकता यदि यह असली होता तो कोई मुसलमान नहीं मर सकता था। कुराद को मुर्दे की छाती से बांध देते या मायकोफ़ून लगाकर मुर्दे के कान में कुरान सुना देते और वह जिन्दा हो जाता-मस्जिदों में कुरान रखने से भूकम्प आ जाता तो हमही नहीं दुनियां इसे असली खुदाई कुरान मान लेती। इस कसौटी के अनुसार भी मोजूदा कुरान असली साबित नहीं होता है। इस कुरान में अनेक ऐसी बातें दीं हैं जो खुदाई किताव में नही हो सकती हैं

कुरान में विज्ञान बिरुद्ध चन्द स्थल

" आसमान जमीन पर गिरने से थमा है मगर उसके हुक्म से। " कु पा १७ सू हज्ज ६५ " जिस दिन हम आसमान को इस तरह लपेटेंगे जैसे तूमार में कागज लपेटते हैं। " ॥ कु सू अम्बिया रु ७ आ १०४ ॥

"कयामत के दिन सारी जमीन उसकी मुट्ठी में होगी और सब आसमान लिपटे हुए उसके दाहिने हाथ में होंगे। "कु पा २४ सू जुमर रु आ ७ आ ६७ जिस वक्त सूरज लपेट लिया जाय। १। और जिस वक्त तारे झड़ पड़ें। २। और जिस वक्त आसमान की खाल खींची जाय। ११। कु पा ३० सू तकवीर जब आसमान फट जावे और अपने परवदिगार की बात सुनेगा.... । २। जब जमीन तान दी जावेगी। " कु पा ३० सू इन्शिकाक "

इस प्रकार की पचासों बातें बुद्धि विरुद्ध कुरान में हैं जिनको देखकर उसे खुदाई नहीं माना जा सकता है। क्योंकि सूना आसमान को कागज की तरह लपेटना उसे फाड़ना-जमीन को चादरे की तरह तान देना, आसमान का जमीन पर गिरना बताना विद्या की बात नहीं है अतः खुदाई नहीं है।

कुरान में परस्पर बिरोधी बातें भी अनेक हैं।-दोप्रमाण उपस्थित हैं--

"ऐ पैगम्बर ! मुसलमानों को लडने पर उत्तेजित करो कि अगर तुम में से बीस रहने वाले होंगे तो दोसौ पर ज्यादा ताकतवर बैठेंगे, अगर तुममें से सौ

ग दो हजार काफिरा पर ज्यादा ताकतवर बैठेंगे। ६५।

"अब खुदा ने तुम पर से अपने (पहिले हुक्म का बोझ हल्का कर दिया और उसने देखा कि तुम में कमजोरी है तो अगर तुममें से जमें रहने वाले सौ होगे तो दोसौ पर ज्यादा ताकतवर बैठेंगे और अगर तुममें से जमे रहने वाले हजार होगे तो खुदा के हुक्म से दो हजार पर ज्यादा ताकतवर बैठेंगे।" कु पा १० अनफात आ ६६

इसके एक तो खुदा के हुक्म में परस्पर विरोध है तथा यह भी स्पष्ट है कि अरबी खुदा सर्वज्ञ नहीं की जो मुसलमानों के दिलों की कमजोरी भी पहिले नहीं समझ सका था और उसे अपनी गलती अनुभव करके बाद में हुक्म में परिवर्तन करना था।

और खजूर और अंगूर के फलों से तुम शराब और अच्छी रोजी बनाते हो । कु०पा० १४ सू नहल आ आ ६७।

"मुसलमानों ! शराब जुआ बुत और पांसे गन्दे काम है। उनसे बचो। शायद तुम्हारा भला हो।" कु पा ७ मायादा रु १२ आ ९०।।

इसमें पहिले शराब की प्रशंसा और फिर उसकी निन्दा की गई है। उपरोक्त परस्पर विरुद्ध बातें जिस किताब कुरान में हो तो वह खुदाई कैसे माना जा सकता है। क्यों कि इससे खुदा पर दोष लगता है।

खुदा रोजनामचा लिखता है

"और जैसी जैसी सलाहें रातों को करते हैं, अल्लाह लिखता जाता है। पा ५ सू निसा आ ८१।। (खुदा ने कहा) और लोगों की कार गुजारियों का रजिस्टर रखा जायेगा। .... कोई छोटी या बड़ी बात ऐसी नहीं जो उसमें न लिखी हो ...।" पा १५ सू कहफ रु ६ आ ४९

'हरगिज नहीं ! जो कुछ यह बकता है हम लिख लेते हैं और इनके हक से सजा बढ़ाते चले जायेंगे।" पा १६ सू मरियम रु ५ आ ७९।

"कुकर्मी लोगों के कर्म रोजनामचा और कैदियों के रजिस्टर में हैं।७। अच्छे लोगों के कर्म बड़े रुतबे वाले लोगों के रजिस्टर में हैं'।८। कु पा ३०

सू ततफीफ ।

"यह हमारा दफ्तर है तुम्हारे काम ठीक ठीक बतलाता है । जो कुछ तुम करते थे हम उनको लिखवाते जाते थे ।' कु०पा० २५ सू० जासियह रु० ४ आ० २६ ।

खुदा संसार की व्यवस्था हर बात को लिखाकर करता है उसका दफ्तर भी है । हर बात को वह याद नहीं रख सकता है । इससे खुदा तहसीलदार जैसा है जिसके यहां हर बात लिखी मुहाफिजखाने में रखी रहती है । सर्वज्ञ ईश्वर को कमजोर याददाश्त बताने वाली किताब खुदाई नहीं मानी जा सकती है क्योंकि खुदा अपनी बदनामी करने वाली बातें स्वयं नहीं लिख सकता है ।

खुदा सर्व व्यापक नहीं वह बहिश्त में रहता है ।

"खुदा सच्चा बादशाह बहुत ऊँचा है" कु० पा० १८ सू मोमिनून रु० ६ आ० ११६

परहेजगार (बहिश्त) के बागों में और नहरों में होंगे ।५४। सच्ची बैठक में बादशाह (खुदा) के पास जिसका सब पर कब्जा है बैठेंगे । कु०पा० २७ सु० कमर रु० ३ आ० ५५ ।

"खुदा के मुकाबिले जो सीढ़ीयों का मालिक है ।३। उनसे फरिश्ते और रूह उसकी तरफ एक दिन में चढ़ते हैं और उसका अन्दाज ५०००० वर्ष का है ।

कु०पा० २८ सू० मआरिज आ० ४

इसमें बताया गया है कि अरबी खुदा इस जमीन से इतनी दूर रहता है कि वहां तक पहुंचने में फरिश्तों और रूह को ५० हजार साल लग जाते हैं । खुदा बैठक में जन्नत में रहता है बैठक का मतलब होता है कमरा जिसकी चारों ओर दीवार हों ऊपर छत हो । ऐसा खुदा न सर्व व्यापक हो सकता है, न सर्वाधार व सर्वज्ञ हो सकता है । यह गुण जीव के हैं परमात्मा के नहीं । जो कुरान खुदा को इन गुणों से रहित मानता है वह खुदाई नहीं हो सकता है ।

लूट व व्यभिचार का समर्थन—

"और बहुत सी लूटें उनके हाथ लगीं और अल्लाह हिकमत वाला है ।

१९। अल्लाह ने तुमको बहुत सी लूटों को देने का वायदा किया था कि तुम उसे लोगे, फिर यह (खैबर की लूट) तुमको जल्दी दी···१२०। कु० पा० २६ सू० फतह रु० ३ ।।

"ऐसी औरतें जिनका खाबिन्द जिंदा है उनका लेना भी हराम है, मगर जो कैद होकर तुम्हारे हाथ लगीं हों उनके लिए तुमको खुदा का हुक्म है। इनके सिवाय बाकी सब औरतें हलाल हैं·····१२४। कु० सू० निसा ।।

युद्ध में विपक्ष की औरतें व लड़कियों को व्यभिचारार्थ पकड़ लाना, गरीब जनता की इज्जत व धन सम्पत्ति को लूट लेना और इस नीच कर्म का खुदा द्वारा आदेश व समर्थन होना ऐसी बातें जिस किताब में हों उसे खुदाई नहीं माना जा सकता है। क्योंकि खुदा न्यायकारी व सब का पिता है।

अन्य मजहब वालों से लड़ने का आदेश

"मुसलमानो अपने आस पास के काफिरों से लड़ो और चाहिए कि वह तुमसे सख्ती मालुम करे·····।" कु०पा० ११ सू० नौवां रु० १६ आ० १२३

"काफिरों से लड़ते रहो यहां तक कि फसाद न रहे और खुदा ही का दीन हो जाये ।। कु०पा० ९ सू० अन्फाल रु० ५ आ० ३९०

फिर जब अदब के महीने निकल जावें तो मुशरिकों (खुदा के साथ अन्य की उपासना करने वाले) को जहां पाओ कत्ल करो और उनको गिरफ्तार करो उन को घेर लो और हर घात की जगह उनकी ताक में बैठो।५। कु० पा० १० सू० तौबा।

"मुसलमानों को चाहिये कि मुसलमानों को छोड़कर काफिरों को अपना दोस्त न बनावें और जो वैसा करेगा, तो उससे और अल्लाह से कुछ सरोकार नहीं।" सू० आल इमरान रु० ३ आ० २८

'ऐ पैगम्बर ! काफिरों और मुनाफिकों से जहाद कर और उन पर सख्ती कर उनका ठिकाना तो नरक है और वह बुरी जगह है।९। कु०पा० २८ सू० तहरीम।

जो कुरान मनुष्य जाति में अपनी भाई चारे को मिटाकर परस्पर में

लड़ने लड़कर इस्लाम फैलाने, धार्मिक विचारों में भिन्नता होने से उनको करने के आदेश देता है। वह इस ईश्वर का बनाया हरगिज नहीं माना जा सकता है प्राणी मात्र का पिता सभी का कल्याण चाहने वाला सर्व हितकारी सर्व रक्षक हो। यह किसी द्वेषी हृदय वाले की रचना हो सकती है जो मुसलमानों का पक्षपाती व्यक्ति रहा होगा, अथवा अरबी मुसलिम खुदा होगा।

अपनी पूजा का भूखा खुदा

परमेश्वर तो पूर्ण है उसे किसी बात की जरूरत नहीं है कुरान सूरते इखलास में भी उसे बेपरवाह लिखा है। उसका हर एक काम दूसरों के लिये है किंतु यह कुरान अल्लाह को भारी गरजमन्द बताता है। देखो कु०पा० २७ सू० जारियात रु० ३ आ० २७ में लिखा है "मैंने जिन्नाओं और आदमियों कोइसी मतलब से पैदा किया है कि हमारी पूजा करें।'

इसमें खुदा को अपनी पूजा कराने का शौकीन लिखा है और इसीलिये दुनियां को उसने बनाया है। यदि यही शौक खुदा को था तो सभी को मुसलमान व अकलमन्द बना देना था अन्धे, मूर्ख, जाहिलों को पैदा करके उसने भूल क्यों की। इससे तो खुदा गरजमन्द साबित हो जाता है। जो कुरान खुदा को अपनी पूजा का भूखा बतावे उसे खुदाई नहीं माना जा सकता है।

अल्लाह की मदद करो

कुरान में लिखा है···जो अल्लाह की मदद करेगा अल्लाह जरूर उसकी मदद करेगा कु०पा० १७ सू० हज्ज रु० ५ आ० ४०।

जो अरबी खुदा इन्सान से मदद माँगता हो और बदले में कर्ज देने वाले साहूकार की मदद का वायदा करता हो तो वह न तो खुदा हो सकता है और न वह किताब खुदाई हो सकती है जो खुदा को मदद की जरूरत मंद बताती है तो खुदा तो सर्व शक्तिमान है फिर भी मदद को मांगता है ?

खुदा को कर्ज देने से पाप माफ

"अगर तुम अल्लाह को खुश दिली से कर्ज दें, तो वह तुमको दूना करेगा और तुम्हारे पाप माफ करेगा।" कु०पा० १८ सू० तगा० रु० २ आ० १७।

पाप माफ करने व कर्ज की रकम को पूरा करके लौटाने का लालच देकर जो खुदा (उधार) मांगता हो उसे कौन खुदा मानेगा और ऐसी किताब कुरान को कैसे खुदाई मान सकेगा इसका मतलब यह है कि मालदार कर्ज देकर पाप माफ करा लेंगे और गरीब बेचारे रह जावेंगे। यह तो खुदाई निष्पक्ष न्याय नहीं होगा।

कुरान केवल तफसील (व्याख्या) है

"यह किताब (कुरान) इस किस्म की नहीं कि खुदा के सिवाय कोई इसे अपनी तरफ से बना लावे, बल्कि जो किताबें (तौरेत-जबूर इन्जील) इससे पहिले की हैं उनकी तस्दीक करती हैं और उन्हीं की तफसील है इसमें सन्देह नहीं यह खुदा की ही उतारी हुई है। कु०पा० ११ सू० यूनिस रु० ५ आ० ३७।

असली पुरानी किताबों की व्याख्या होने से कुरान का महत्व समाप्त हो जाता है। महत्व तो पुरानी किताबों का ही रहता है। इसका यह भी अर्थ है कि पुरानी किताबों में कोई कमी नहीं थी और कुरान के रूप में कोई नई बात खुदा ने नहीं कही है तब खुदा को इसे उतारने की जरूरत का महत्व ही समाप्त हो जाता है। असल पुरानी किताबों की व्याख्या इन्सान करता है न कि खुदा। अतः कुरान खुदाई नहीं है। और इन्कारी कहने लगे कि हमको कयामत की घड़ी हरगिज न आवेगी। पोशीदा बातों के जानने वाले अपने परवर्दिगार की कसम जरूर आवेगी।" कु०पा० २२ सू० सवा आ० ३।

मौजूदा कुरान ह० मौहम्मद ने बनाया था या छोटे अरबी खुदा ने ?

"मैं तो पूरब और पश्चिम के परवर्दिगार की कसम खाता हूँ। कु०पा० २९ सू० मआरिज आ० ७०।

"खुदा की कसम, तुमसे पहिले हमने बहुत सी उम्मतों की तरफ पैगम्बर भेजे।" सू० नहल आ० ६३।

'खुदा के सिवाय किसी की पूजा मत करो, मैं उसी की ओर से तुमको डराता और खुशखबरी सुनाता हूँ।" कु०पा० ११ सू० हूदआ० २।" ऐ मौहम्मद ! खुदा तुमको माफ करे।' सू० तौबा ४३।

"शुरू करता हूं साथ नाम अल्लाह के' कु०पा० १ सु०वकर आ० १ तेरे परवदिगार की कसम ! हम इन सबसे पूछेंगे।" ९२ सु० हिज्र।

इन आयतों को कहने वाला व्यक्ति असली खुदा से प्रथक कोई आदमी ह० मुहम्मद साहब हैं जो खुदा की कसम खाते हैं, उसी की ओर से डराते व खुशखबरी सुनाते हैं, खुदा का नाम लेकर कुरान लिखते हैं यदि ऐसा नहीं माना जायेगा तो दो खुदा मानने होंगे। एक कुरान लिखने वाला, कस्में खुदा की खाने वाला छोटा अरबी खुदा व दूसरा बड़ा खुदा जिसकी ओर से कुरान लिखने वाला, डराता, खुश खबरी सुनाता व कस्में खाता है। दोनों ही दशा में कुरान असली खुदा का बनाया असली कुरान साबित नहीं होता हैं।

एक प्रश्न—कुरान अपने से पहिले की तीन और खुदाई किताबें मानता है। तौरात मूसा पर- जबूर दाऊद पर और इन्जील ईसा पर उतरी थी। क्या हम पूछ सकते हैं कि तौरात की किस कमी को पूरी करने को खुदा ने जबूर उतारी थी जबूर में क्या भूल थी जो इन्जील उतारनी पड़ी थी। और इन तीनों में खुदा कौन २ सी बातें लिखाना भूल गया था जिन को कुरान में पूरा किया गया है। कैसा खुदा है जो एक बार में सही किताब भी नहीं लिख सकता है। कुरान में जो बुद्धि विरुद्ध विज्ञान व परस्पर विरुद्ध स्थल हैं क्या उन दोषों को दूर करने को अब और किताब उतारेगा।

कुरान में सुअर खाना जायज

कुरान में चार स्थानों पर मजबूरी के नाम पर पाखाना खाने वाले सुअर का गोश्त खाना जायज लिखा है [देखो प्रमाण कु० सूरेत बकर रु० २१ आयत १७३॥ कु० सू० नम्ल रु० १५ आ० ११५॥ कु० सू० मायदा आ० ३ व ८॥ कु० सू० अनआम आ० ११९ व १४६।"

तो जिस किताब कुरान में दुनियां के सबसे गन्दे खाना खाने वाले जानवर सूअर को खाने की आज्ञा देदी गई हो उसे खुदाई किताब नहीं माना जा सकता है क्योंकि पाखाना खाना या पाखाना खाने वाले सुअर को खाना इसमें ज्यादा फर्क नहीं है।

खुदा फरेबी है—

"कुरान में लिखा है जब काफिर तुम पर फरेब करते थे कि तुम को पकड़ रखें या मार डालें या तुमको देश निकाला करदें। और काफिर फरेब करते थे और अल्लाह भी फरेब करता था और अल्लाह धरेब (छलकपट-धोखा-मकर) करने वालों में अच्छा फरेबी है।

। कु०पा० ९ सू० अनफाल रु० ४ आ० ३२।

यह बात खुदा ने अपने बारे में कही है कि वह अच्छा फरेबी है यदि ऐसा है तो कुरान खुदाई नहीं माना जा सकता है क्यों कि इंसान धोखेबाज फरेबी तो हो सकता है पर खुदा इन्सान से भी बढकर अपने को फरेबी (धोखेबाज-मक्कार) बतावे यह सम्भव नहीं है। इसमें कुरान ने खुदा को भी बदनाम किया है।

खुदा बेइन्साफ परीक्षक—

आदम और फरिश्तों की परीक्षा होती थी खुदा ने कहा और (हमने) आदम को सब चीजों के नाम बता दिये। फिर इन चीजों को फरिश्तों के सामने पेश करके कहा कि अगर सच्चे हो तो हमें इन चीजों के नाम बताओ (३१) फरिश्ते बोले तू पाक है जो तूने हमको बता दिया है उसके सिवाय हमको कुछ नहीं मालुम है। तब खुदा ने हुक्मदिया कि रे आदम! तुम फरिश्तों को इनके नाम बता दो, फिर जब आदम ने फरिश्तों को उनके नाम बता दिये। फरिश्तों से कहो—क्यों क्या हमने तुमसे नहीं कहा कि हमको सब कुछ मालुम है (३३) कु० सू० बकर रु० ४।

परीक्षा में परीक्षक का एक विद्यार्थी को प्रश्नों के उत्तर बताकर पास करना व औरों को फेल करना क्या बेईमानी नहीं होगी। कुरान खुदा को भी बे इन्साफ परीक्षक बताकर बदनाम किया है जबकि खुदा ऐसा नहीं कर सकता है। अतः कुरान खुदाई नहीं माना जा सकता है।

गुस्सेबाज खुदा—

(खुदा ने कहा है) फिर जब लोगों ने हमको गुस्सा दिलाया हमने

उनसे बदला लिया, फिर इन सबको डुबो दिया।" कु०पा० २५ सु० जुखरुफ रु० ५ आ० ५५।

गुस्से में आदमी पागल होकर गलत काम हत्या कर बैठता है। मुसिफ को कभी गुस्सा नहीं आता है। जो कुरान खुदा को गुस्सेबाज व हत्यारा बताता है वह खुदाई नहीं माना जा सकता हैं। गुस्सा हमेशा कमजोर को आता है।

फिसाद पसन्द खुदा—

और इसी तरह हर बस्ती बड़े-बड़े फिसादी हमने पैदा किये ताकि वहाँ फिसाद करते रहें और जो फिसाद अपने ही जनों के लिये करते हैं और नहीं समझते। कु० पा० ८ सु० अनआम रु० १५ आ० १२३।

फिसादियों को नेक बनाना खुदा का काम था न कि फिसाद करने के लिये ही उनको पैदा कर भले लोगों पर जुल्म करना जो किताब खुदा को झगड़ा फसाद गुण्डागर्दी पसन्द बताती है वह खुदाई नही मानी जा सकती हैं। खुदा इन्साफ पसन्द अमन पसन्द है न कि जालिमों का हिमायती।

खुदा जालिम है—

खुदा ने कहा—हमको जब किसी गांव को मार डालना मंजूर होता है हम उसके खुशहाल लोगों को हुक्म देते हैं। फिर जब वह उसमें बेहुक्मी करते हैं तब उन पर यह सजा साबित हो जाती है। फिर हम इस बस्ती को मार कर तबाह कर देते हैं। कु० पा० १६ सू० बनीउसराएल आ० १६।

लोगों को मारने के लिये कादिरे मुतलक खुदा को भी ओछे हथकण्डे अपनाने पड़ते हैं खुशहाल लोगो को न मानने योग्य हुक्म देकर उनको गुनहगार बनाना और उनको मार डालकर खुशी मनाना खुदा का साक्षात अपमान हैं। ऐसी बेतुकी बातें जिसमें हों तो वह कुरान खुदाई नही माना जा सकता हैं।

ना तजुर्बेकार खुदा—

हमने चमत्कारों का भेजना बन्द कर दिया क्योंकि अगले लोगों ने

झुठलाया और हम चमत्कार सिर्फ डराने की गरज से भेजा करते हैं ।५९। बावजूद हम इन लोगों को डराते हैं लेकिन हमारा डराना इनकी सरकशी को बढ़ाता है । ६०। कु० पा० १५ सू० बनीइसराइल रु० ६ ॥

इसके अनुसार खुदा को अपनी गलती का तजुर्बा बाद को हुआ था, पहिले नहीं । जो किताब कुरान सर्वज्ञ खुदा को ना तजुर्बेकार व अफसोस करने वाला बताती है वह खुदाई हो ही नहीं सकती है।

जुल्म के बदले जुल्म

ऐ ईमान वालो जो लोग मारे जावें, उनमें तुमको जान के बदले जान का हुक्म दिया जाता है । आजाद के बदले आजाद और गुलाम के बदले गुलाम औरत के बदले औरत । सू० बकर रु० २२ आ० १७८ ।

गुण्डागर्दी के बदले गुण्डागर्दी करना, बुराई का जबाव बुराई से देना । कोई कोई गुण्डा किसी भले आदमी की औरत से बलात्कार कर डाले तो वह भला आदमी भी उसकी नेक औरत से बलात्कार करे। यह आदेश जिस कुरान में दिया हो उसे कोई भी खुदाई नहीं मान सकता ।

तलाक की गन्दी प्रथा

इस्लाम में औरतों को तलाक तीन बार दी जाती है । कुरान में लिखा है "अब अगर (औरत को तीसरी बार) तलाक देदी तो इसके बाद जबतक औरत दूसरे पति के साथ निकाह न करले उसके पहिले पति के हलाल नहीं हो सकती। हां अगर उसका दूसरा पति उससे विषय भोग करके तलाक देदे तो मियाँबीबी पर कुछ पाप नहीं कि फिर दूसरे से (परस्पर) प्रेम करले बशर्ते कि दोनों को आशा हो कि अल्लाह की बँधी हुई हदों पर कायम रह सकेगा । कु०पा० २ सू० बकर रु० २९ आ० २३ ॥

इसमें औरत दूसरे से निकाह करके उससे विषयभोग कराके आने की शर्त लगाने की बात औरत के सतीत्व पर चोट है और उसे बेशर्म बनाने वाली है । ऐसी शर्त पति से पुनः मेल के लिये जिस कुरान में लगाई गई हो वह खुदाई कैसे हो सकती है । तलाक के बाद दोनों में फिर समझौता हो

जावे तो वे पुनः क्यों एक नहीं हो सकते? सभ्य समाज गैर से सम्भोग कराने की अनिवार्य शर्त को खुदाई नहीं मान सकता है। यह शर्त तो मुस्लिम स्त्री की खुली बेइज्जती है।

देवी मरियम का शील भंग—

और वह बीबी (मरियम) जिसने अपनी शर्मगाह की यानी शिहबत की जगह की हिफाजत की तो हमने उसमें अपनी रूह फूंकदी और हमने उसके बेटे ईसा को दुनियाँ जहान के लिये निशानी करार दिया। कु० पा० १७ सू० अम्विया रु० ६ आ० ९१ ॥

इन्जील में पवित्रात्मा के आशीर्वाद से ईसा की उत्पत्ति लिखी है जो कि शिष्ट भाषा में है।

कुरान में अरबी में 'फुर्जहा' शब्द का प्रयोग किया है जिसका अर्थ शिहबत की जगह (संभोग स्थान) है। कुरान की भाषा सभ्यता की सीमा के बाहर है। खुदा आशीर्वाद से भी तो सन्तान पैदा कर सकता था। नाक में फूंक मार कर भी गर्भाधान कर सकता था क्योंकि नाक की नसों का गर्भाशय से सीधा सम्बन्ध होता है। पर ऐसा न करके कुआरी लड़की, देवी मरियम के गुप्तांग में फूंक मारना और रूह को गर्भाशय में प्रविष्ट कराने की बात मरियम के शीलभंग का अपराध है साथ ही जिस भाषा में यह लिखा हैं वह खुदाई भाषा भी नहीं हो सकती हैं। इससे कुरान खुदाई नही माना जा सकता हैं। किसी व्यक्ति की रचना हो सकती है जिसमें शील का भी अभाव रहा होगा। और निर्लज्जता भी होगी।

खूदा का न थकना—

बल्कि खुदा के दोनों हाथ फैले हुए हैं जिस तरह चाहता हैं खर्च करता हैं। सु० मायदा आ० ६४···और हमने आसमानों को अपने हाथ की ताकत से बनाया है। हम सामर्थ वाले हैं। पा २७ सू० जारियात आ० ४७ ॥

और हमने आसमानों और जमीन को और जो कुछ उनके बीच में है छः दिन में बनाया है और हम नहीं थके कू०पा० २६ सू० काफ रु० ३ आ० १७।

इन्सान की तरह खुदा के दो हाथ होते, जो कड़ी मेहनत करके जमीन व आसमान को छः दिन में बनाने और फिर भी न थकने की शेखी खुदा द्वारा कही गई है, जबकि कु० सू० बकर रु० १४ आ० ११७ में लिखा है और वह आसमान और जमीन को बनाने वाला हैं और जब किसी काम का करना ठान लेता हैं तो बस उसके लिये फर्मा देता है कि 'हो' और वह हो जाता है। कु० पा० २४ सू० हामीम सज्दह आयत १२ में संसार बनाने में दिन ८ लगाना लिखा है कुरान की उपरोक्त तीनों बातें एक दूसरे से विरुद्ध हैं। यदि 'हो' कहकर खुदा ने संसार बनाया था तो दोनों हाथों से कड़ी मेहनत करके छः या आठ दिन क्यों लगाये थे ? और खुदा का इतनी मेहनत करने पर भी न थकने की शेखी मारना क्या उचित था ? क्या सर्व शक्तिमान (कादिरे मुतलक) ऐसा ही खुदा होता हैं ? तौरात उत्पत्ति २ में लिखा है यों आकाश और प्रथ्वी और उसकी सारी सेना का बनाना समाप्त हो गया और परमेश्वर ने अपना काम जिसे वह करता था सातवे दिन समाप्त किया। और उसने अपने किये हुए सारे काम से सातवे दिन विश्राम किया।

कुरान तौरात की खुदाई किताब मानता है। इसमें विश्राम शब्द बत्लाता है कि खुदा थक गया था और उसने थकावट मिटाने को आराम किया था। कुछ भी हो खुदा की बातों में परस्पर विरोध कुरान में होने से कुरान खुदाई नहीं माना जा सकता है। विज्ञान के अनुसार भी संसार छः दिन में नहीं बना था। इसके बनने और क्रमिक विकास में लाखों करोड़ों वर्ष लग जाते हैं। दुनियां में 'कुन' होकर कुछ भी बनाना छूमन्तर का खेल नहीं था और न अब है। संसार स्थाई नियमों से चलता है।

कसमें तोड़ने की मुसलमानों को छूट

तुम लोगों के लिये खुदा ने तुम्हारी कसमों को तोड़ डालने का हुक्म रखा है और अल्लाह ही तुम्हारा मददगार और जानकार हिकमत वाला है। कु०पा० २८ सू० तहरीम आ० २ खुदा लोगों को यह उपदेशतो दे सकता है कि अपने वायदों पर कसमों पर कायम रहो उन्हें पुरा करो ताकि तुम्हारी ईमान

दारी पर लोग विश्वास करते रहें। पर यह नहीं कह सकता है कि प्रतिज्ञा दूसरों से करके तोड़ दें, कसम खाकर बेईमान बनजाओ तो जिस किताब खुदा को (झूठी असमें खाकर) धोखा देने का उपदेश देने वाला बताया गया हो उसे कोई भी सभ्य आदमी खुदाई नहीं मान सकता है।

खुदा छोटा है वह घेरा जा सकता है—

और उस दिन तुम्हारे परवर्दिगार के तख्त को आठ फरिश्ते अपने अपने ऊपर उठाए होंगे। १७। कु० पा० २६ सू० हाक्का ॥

और उस दिन तू देखेगा कि फरिश्ते अपने परवर्दिगार की खूबी बयान करते हैं तख्त को आस पास घेरे हैं।७५। कु० पा० २४ सु जुमर रु० ८ ॥

इन प्रमाणों से दो बातें बताई गई हैं। खुदा अर्श (तख्त पर बैठा होगा जिसे आठ फरिश्ते अपने ऊपर उठाए होंगे। दूसरा खुदा फरिश्ते के घेरे में होगा। हमको निम्न ऐतराज है—खुदा तखत से बड़ा हैं तो तख्त पर बैठ नहीं सकेगा, इधर उधर लटकता रहेगा। यदि तखत से छोटा है तो तखत खुदा से बड़ा साबित हो जायगा। यदि दोनों बराबर हैं तो खुदा सब से बड़ा है यह बात गलत हो जावेगी। तखत बनने से पहिले खुदा किस पर बैठता था? यदि तखत हमेशा से खुदा के साथ है तो भी उसके लिहाज से दोनों बराबर हो जावेंगे। जब खुदा सर्वशक्तिमान है तो तखत को उठाने की क्या जरूरत पड़ेगी? जब फरिश्ते अधर आकाश में खड़े रहेंगे तो तखत भी खुदा को ताकत से क्यों न सधा होगा? जब तखत पानी पर था जैसा कि कुरान में अन्यत्र लिखा है तो पानी किस पर था? खुदा जब फरिश्तों के घेरे में आ सकता हैं तो अनन्त लामहदूद कैसे माना जा सकेगा तथा आकाश खुदा से भी बड़ा साबित हो जावेगा क्योंकि खुदा उसके थोड़ी सी जगह में आ जावेगा। जो कुरान खुदा को छोटा सा व घेरा जाने वाला मानता है वह खुदाई नहीं माना जा सकता हैं।

क्या कल्मा बोलना कुफ्र है?

'लाइलाह इल्लल्लाह मोहम्मद रसूलाह, यह कल्मा कुरान में नहीं है, साथ

हो कुरान के खिलाफ भी है कु०सू० निसा० रु० २७ आ० ११६ में लिखा है "यह गुनाह तो अल्लाह माफ नहीं करता कि उसके साथ किसी को शरीक किया जावे और इससे कम चाहे किसी को माफ करे और जिसने अल्लाह का शरीक ठहराया वह दूर भटक गया।"

कु०पा० १० सू० योवा आ० ५ में खुदा के साथ किसी को शरीक ठहराने वालों को कत्ल का आदेश है।

तब या तो कल्मा पढ़ने वाले काफिर हुए जो मु० साहब का नाम खुदा के साथ कल्मे में जोड़ते हैं और या कुरान ही खुदाई नहीं है जिसमें कल्मा को गलत माना है ?

खुदा ने जमीन व आसमान नहीं बनाये थे

पहाड़ जमीन पर गाढ़े ताकि तुम्हें लेकर किसी और तरफ झुकने न पावे।" कु०पा० १४ सू० नहल आ० १४ ॥

"जमीन में पहाड़ों को गाढ़ दिया, कु०पा० सू० नाजियात आ० ३१।

"आसमान में ओलों के पहाड़ जमे हुए हैं।" पा० १८ सू० नूर आ० ४३ ॥

"और हमने आसमान को टटोला और उसे सख्त चौकीदारों और अंगारों से भरा पाया।" कु०पा० २९ सू० जिन्न आ० ८ ॥

जैसे खूटा जमीन में ऊपर से गाढ़ा जाता है वैसे ही पहाड़ जमीन में उपर से नहीं गाढ़े जाते हैं। दोनों चीजें पहाड़ और जमीन अलग अलग नहीं होती हैं। पहाड़ जमीन के अन्दर बनते हैं और उभर कर ऊपर आते है। अतः खुदा का पहाड़ गाढ़ने का दावा गलत है उसने यदि जमीन बनाई होती तो वह यह बात खुद भी जानता होता।

इसी तरह खुदा आसमान को टटोलने पर जान सका कि उसने चौकीदार (लोग पहरा देते हैं) और अंगारे भरे पड़े हैं अगर उसने आसमान को खुद बनाया होता तो उसे सही जानकारी होती कि आसमान में ओलों के पहाड़ चोकीदार व आग के अंगारे बिल्कुल नहीं हैं। तब वह ऊपर की बेतुकी गलत बातों को न कहता। कुरान में ऐसी गलत बातों के होने से वह खुदाई नहीं माना

जा सकता है।

नोट:—विशेष जानने के लिये हमारी कुरान पर सप्राण १७६ प्र० मूल्य ३) तथा 'कुरान की छानबीन, मू० ६ ५० पुस्तकें देखें।

इस्लाम में ७३ में ७२ फिरके दोजखी

मिशकात किताबुलईमान जिल्द १ हदीस नं० १६३ में लिखा है कि ह० मौहम्मद साहब ने कहा "मेरी उम्मत के ७३ फिरके होंगे, उनमें एक जन्नती होगा ७२ दोजखी होंगे।"

बतावें कि इस्लाम के कौन कौन से ७२ फिरके वाले दोजख में जावेंगे और एक जिन्नती फिरके वालों की पहिचान क्या है? पैगम्बर के इस दावे के अनुसार "हर मुसलमान जन्नत में जावेगा,, कुरान का यह दावा गलत है अतः कुरान खुदाई नहीं है।

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तक
परिग्रहण क्रमांक .....
दयानन्द महिला महाविद्या

S. P. H. 77-1000

खण्डन-मण्डन ग्रन्थमाला के ग्रन्थों की सूची

कुरान की छानबीन	५.५०,६.५०
भागवत समीक्षा	६.००
गीता विवेचन	७.००
बाइबिल दर्पण	४.००
कुरान पर १७६ प्रश्न	३.००
कुरान दिग्दर्शन	६.५०
असत्य पर सत्य की विजय	३.५०
ईश्वर सिद्धि	४.५०
वैदिक यज्ञ विज्ञान	३.००
जैन मत समीक्षा	३.५०
मुनि समाज मुखमर्दन	२.५०
अवतार रहस्य	३.५०
मूर्ति पूजा खण्डन	३.५०
टोंक के शास्त्रार्थ	३.५०
माता पुत्री का सम्वाद	२.२५
भारतीय शिष्टाचार	२.५०
शिवलिंग पूजा क्यों ?	३.५०
अद्वैतवाद मीमांसा	२.००
प्रार्थना भजन भास्कर	२.२५
यजुर्वेद अ० ४० सव्याख्या	२.२५
यजुर्वेद अ० ३१ सव्याख्या	१.००
वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है	१.५०
पुराण किसने बनाये ?	२.००
माधवाचार्य को डबल उत्तर	२.२५
पौराणिक गप्प दीपिका	१.२०
इस्लाम दर्शन	१.००
कबीर मत गर्व मर्दन	२.००
ब्रह्माकुमारी मत खण्डन	१.००
मौलवी हार गया	२.५०
स.प्र. की छीछालेदड़ का उत्तर	.७५
महान पुरुष कैसे बनते हैं	१.५०
सव्याख्या विवाह पद्धति	२.५०
अण्डा और मांस में विष	.२०
तुलसी और सालिगराम चोटी २० पैसे, नेऊ ५० पैसे	.५०
कुरान के विचारणीय बातें	.६
पुराणों के कृष्ण	१.००
शिव जी के चार विलक्षण बेटे	.६०
मृतक श्राद्ध खण्डन	.७५
विभिन्न मतों में ईश्वर	.६५
गीता पर ४२ प्रश्न	.६५
शास्त्रार्थ के चेलेंज का उत्तर	.७५
पौराणिक कीर्तन पाखण्ड है	.७५
बाइबिल पर सप्रमाण ३१ प्रश्न	.३५
अर्थ सहित वैदिक संध्या	.७०
सनातन धर्म में नियोग व्यवस्था	.७०
नारी पर मजहबी अत्याचार	.५०
हँसामत का पोल खाता	.५०
पौराणिक मुख चपेटिका	.५०
दुर्गा पर नरबलि	.५०
स्वर्ग विवेचन	.५५
हनुमान जी बन्दर नहीं थे	.५०
कुरान दर्पण	५)
शैतान की कहानी	.५०
कुरान में परस्पर विरोधी स्थल	.२०
खुदा का रोजना मचा	.२०
नृसिंह अवतार वध	.३०
संसार के पौराणिकों से ३१ प्र.	.२०
अवतारवाद पर ३१ प्रश्न	.२०
ईसा मुक्तिदाता नहीं था	.२०
मरियम और ईसा	.२०
मूर्ति पूजा पर ३१ प्रश्न	.२०
ईसाई मत का पोलखाता	.२०
मृतक श्राद्ध पर २१ प्रश्न	.२५
तम्बाकू में विष	.२०

पता—वैदिक साहित्य प्रकाशन, कासगंज (एटा) उ० प्र० भारतवर्ष

ओ३म्

खण्डन मण्डन ग्रन्थमाला पुष्प सं० ७८

5328

कुरान और अन्य मजहब

लेखक—

डा० श्रीराम आर्य

कासगंज (एटा) उ० प्र०

प्रकाशक

वैदिक साहित्य प्रकाशन

कासगंज (एटा) उत्तर-प्रदेश भारतवर्ष

दयानन्दाब्द १६१

प्रथम बार आर्य संवत् १६७२६४६०८६ [मूल्य ८० पैसे

११०० सन् १९८६ ई०

ओ३म
गुरु विरजानन्द दण्डी
संदर्भ पुस्तकालय
दयानंद महिला महाविद्यालय
कुरुक्षेत्र
वर्गीकरण नम्बर .....
पु. परिग्रहण क्रमांक 5328

❀ ओ३म् ❀

खण्डन मण्डन ग्रन्थमाला पुष्प सं० ७८

कुरान और अन्य मजहब

लेखक—

डा० श्रीराम आर्य

कासगंज (एटा) उ० प्र०

प्रकाशक

वैदिक साहित्य प्रकाशन

कासगंज (एटा) उत्तर-प्रदेश भारतवर्ष

दयानन्दाब्द १६१

प्रथम बार आर्य संवत् १९७२९४९०८६ [मूल्य ८० पैसे

११०० सन् १९८६ ई०

कुरान और अन्य मजहब

सर्व धर्म समभाव सुन्दर वाक्य है। यह एक उत्तम आदर्श है कि सभी मनुष्यों को अपने विश्वास के अनुसार अपने ही प्रकार से ईश्वर वा अपने इष्ट देव की उपासना करने दी जावे। उसके धार्मिक विश्वास का आचरण को बलात् न रोका जावे तथा किसी को भी दूसरे की मान्यता पर अपनी मान्यता को मनवाने के लिए जोर जबर्दस्ती की प्रक्रिया न अपनाई जावे। जहां तक कि कोई व्यक्तिअ पने धार्मिक विश्वास के आधार पर अन्यो को पीड़ा देने वाले कर्म न करे उसके साथ छेड़छाड़ न की जावे और न भिन्न विश्वास के आधार पर किसी का किसी के साथ द्वेष वा घृणा का व्यवहार करना चाहिए।

वेद ने बड़े सुन्दर शब्दों में सर्व धर्म समभाव का प्रतिपादन करते हुए मानव को निर्देश दिया है।

संगच्छध्वम् संवदध्वम् संवोमनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानानामुपासेत॥
समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्त मेषाम्।
समानं मन्त्रमभि मन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि॥

ऋग्वेद १० १९१।

वेद का आदेश है कि हे मनुष्य! तुम सब साथ साथ चलो, साथ साथ मिलकर रहो; परस्पर प्रेम से बातचीत करो। तुम सब के चित्त एक समान हों। एक समान होकर ज्ञान प्राप्त करो। जिस प्रकार पहिले लोग परमात्मा की उपासना किया करते थे तुम भी मिलकर उसी प्रकार परमेश्वर की उपासना किया करो। तुम सब के विचार समान हों, परस्पर मेल मिलाप व संगति भी एक समान हो, सबके चित्त व विचार एक समान हों, अविरोधी हों। सारे मानव समाज को परस्पर में सहअस्तित्व

के साथ रहते हुए उन्नति करने के लिए परमात्मा ने वेद में कितना सुन्दर उपदेश दिया है। ऐसे सुन्दर मानव हितकारी उपदेश संसार के किसी भी मजहबी धर्म ग्रन्थ में नहीं मिलते हैं।

'मित्रस्याऽहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।'

वेद के इस आदेश के अनुसार आर्य (हिन्दू) संसार के सारे प्राणियों को मित्र की ही दृष्टि से देखते हैं।

वर्तमान सृष्टि को बने हुए लगभग दो अरब वर्ष हो चुके हैं उस समय से संसार के सभी मनुष्य एक ही वैदिक धर्म के मानने वाले थे। उन सब की भाषा भी एक ही थी बोली भी सब की एक ही थी। कोई झगड़े फिसाद उनमें न थे। इस बात की पुष्टि यहूदी-ईसाई व मुसलमानों के मान्य धर्म ग्रन्थ तौरात व कुरान से भी होती है जिनको ये मजहब खुदाई किताबें मानते हैं। उनमें लिखा है—

"सारी पृथ्वी पर एक ही भाषा और एक ही बोली थी।१। उस समय लोग पूर्व की ओर चलते चलते बिनार देश में एक मैदान पाकर उसमें बस गए।२। तब वे आपस में कहने लगे कि आओ हम ईंटें बना-बना के भली भांति आग में पकायें और उन्होंने पत्थर के स्थान पर ईंट से चूने के स्थान पर गारे से काम लिया।३। फिर उन्होंने कहा, आओ हम एक नगर और एक गुम्मद बना लें जिसकी चोटी आकाश से बातें करे। इस प्रकार से हम अपना नाम करें, ऐसा न हो कि हमको सारी पृथ्वी पर फैलना पड़े।४। जब लोग नगर और गुम्मद बनाने लगे तब उन्हें देखने के लिए यहोवा (खुदा) उतर आया।५। और यहोवा (खुदा) ने कहा मैं क्या देखता हूं कि सब एक ही दल के हैं और भाषा भी एक ही उन सबकी है और उन्होंने ऐसा ही काम भी आरम्भ किया और अब जितना वे करने का यत्न करेंगे उसमें से कुछ उनके लिए अनहोना न होगा।६। इसलिए आओ, हम उतर के इनकी भाषा में बड़ी गड़बड़ी डालें कि वे

एक दूसरे की बोली को न समझ सकें ।७। इस प्रकार यहोवा (खुदा) ने उनको वहां से सारी पृथ्वी पर फैला दिया, और उन्होंने उस नगर का बनाना छोड़ दिया ।८। इस कारण उस नगर का नाम बाबुल पड़ा; क्योंकि सारी पृथ्वी की भाषा में जो गड़बड़ी है सो यहोवा (खुदा) ने ही डाली और वहीं से यहोवा ने मनुष्यों को सारी पृथ्वी के ऊपर फैला दिया।" तौरात उत्पत्ति ११।।

कुरान पारा २ सूरे बकर रुकू २६ आ २१३ में भी लिखा है "शुरू में सब लोग एक ही दीन रखते थे, फिर अल्लाह ने पैगम्बर भेजे जो खुश खबरी देने और इन्कारियों को डराते और उनकी मार्फत सच्ची किताबें भेजीं ताकि जिन बातों में लोग भेद डाल रहे हैं उन बातों का फैसला कर दें.........।"

"अगर तुम्हारा परवर्दिगार चाहता तो लोगों का एक ही मत कर देता, मगर लोग हमेशा भेद डालते रहेंगे।" कु० पा० १२ सूरे हूद रु० १० आ ११८।।

"अगर खुदा चाहे तो सब लोगों को राह पर ले आवे" कु पा १३ सू राद रु ४ आ ३१।।

इन प्रमाणों से प्रगट है कि मानव समाज में जो भाषा भेद बोली भेद व धर्म विषय में मतभेद है वह यहूदी व अरबी खुदाओं के मानव से ईर्षा द्वेष के कारण हैं और यह सब खुदाओं के द्वारा ही पैदा किया गया है। स्वयं मानव समुदाय इन मतभेदों के लिए इन धर्म ग्रन्थों के अनुसार दोषी नहीं है। इस विषय में निम्न स्थल द्रष्टव्य हैं—खुदा ने कहा (ईसाइयों को) जो कुछ शिक्षा दी गई थी उससे फायदा उठाना भूल गये। फिर हमने उनमें दुश्मनी और ईर्षा कयामत तक के दिन के लिए लगादी...।" कु पा० ६ सू० मायदा आ १४।।

"जो मनुष्य अल्लाह का दुश्मन हो और उसके फरिश्तों का, उसके

रसूलों का, जिब्रील और मीकाएल फरिश्तों का तो अल्लाह भी ऐसे काफिरों का दुश्मन है।" आ० ९८ सू० बकर ।।

"मुसलमानों को चाहिए कि मुसलमानों को छोड़कर काफिरों को अपना दोस्त बनावें और जो वैसा करेगा तो उससे और अल्लाह से कुछ सरोकार नहीं.....।" कु०पा० ३ सूरे आल इमरान आ० २८ ।

"ऐ ईमान वालो ! ईमान वालों को छोड़कर काफिरों को दोस्त मत बनाओ। क्या तुम खुदा का जाहिर अपराध अपने ऊपर लेना चाहते हो ?" कु० पारा ५ सूरे निसा रु० २१ आ० १४४।

खुदाई मानी जाने वाली किताब के ऊपर के उद्धरण यह प्रगट करते हैं कि मनुष्य समाज में एकता प्रेम व विश्व बन्धुत्व के मार्ग में अरबी खुदा ही बाधक रहा है। वह लोगों की सामूहिक उन्नति के पक्ष में नहीं था अन्यथा परस्पर में फूट डालने वाले ऐसे विषैले उपदेश अपने शिष्यों वा अनुयाइयों को नहीं देता। अरबी खुदा की दृष्टि में जिन लोगों ने इस्लाम से अन्य मतों वा प्रभु उपासना के प्रकार में विश्वास किया, उनको काफिर माना गया है। काफिर की परिभाषा खुदा ने अपने कुरान में इस प्रकार की है:—

"जो लोग कहते हैं कि खुदा तो यही मरियम के बेटे मसीह हैं, यह लोग काफिर हो गए। कु०पा० ६ सू० मायदा रु०१०आ ७२।

कुरान शरीफ के अनुसार ईसाई लोगों को उनके खुदा ने कभी कुछ आदेश दिए होंगे जिन पर उन्होंने चलना छोड़ दिया होगा। तो इसी कारण से अरबी खुदा ने गुस्सा होकर उनको काफिर बना डाला है। कुरान के अनुसार इञ्जील (ईसाइयों का मान्य धर्मग्रंथ) भी खुदाई व प्रमाणिक ग्रंथ है और उसमें स्पष्ट शब्दों में ईसा मसीह को खुदा का इकलौता बेटा बताया गया है। प्रमाण निम्नलिखित है—

"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना

इकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए ।१६। जो उस पर विश्वास करता है, उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती, परन्तु जो उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहर चुका। इसलिए कि उसने परमेश्वर के इकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया ।१८। जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है परन्तु जो पुत्र को नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उसी पर रहता है।"

यूहन्ना ३।।

तब जो ईसाई लोग इञ्जील के अनुसार ईसा को खुदा का इकलौता बेटा मानकर उसका अनुगमन करते हैं वे काफिर कैसे माने जा सकते हैं। स्वयं कुरान में लिखा है—"और खुदा ईसा को आसमानी किताब और अक्ल की बातें और तौरात और इञ्जील सिखा देगा ।४८। ऐ हमारे परवर्दिगार ! (इंजील) जो तूने उतारी है उस पर हम ईमान लायें और हमने पैगम्बर का साथ दिया। तू हमें गवाहों में लिख रख।" ५३।।

कु० पारा ३ सू आल इमरान रु० ५।।

"उसी ने तुम पर यह किताब (कुरान) उतारी और उन (आसमानी किताबों) की तस्दीक करती है जो उससे पहिले (उतर चुकी) है; और उसीने पहिले लोगों को नसीहत के लिए तौरात और इंजील उतारी.....।" ३। कु०पा० ३ सूरे आल इमरान।

कुरान ही जब इंजील को खुदाई किताब बताता है तो उसीके अनुसार जीवन बिताने व ईसा को इकलौता बेटा खुदा का मानने वालों को काफिर बताना अरबी खुदा का अन्याय क्यों नहीं है ? क्या खुदा अपने कानून रोज बदला करता है ? यदि वह ऐसा करेगा तो उसकी किसी भी बात पर कोई कैसे विश्वास करेगा ?

अरबी खुदा का इस्लाम पक्षपात भी देखने योग्य है। कुरान में खुदा कहता है—

"और जो व्यक्ति इस्लाम के सिवाय किसी और दीन को तलाश करे तो खुदा के यहां उसका वह दीन कबूल नहीं और वह कयामत में नुकसान पाने वालों में से होगा ।८५। ऐसे लोगों की सजा यह है कि इन पर खुदा की और फरिश्तों की और लोगों की सबकी लानत ।" ८७।।

कु पा० ४ सू० आलइमरान रु० ९।।

"(खुदा ने कहा तो जिन्होंने तुम्हारी पैगम्बरी से इन्कार किया, उनको तो दुनियां और आखिरत (दोनों) में बड़ी सख्त मार देंगे। कोई उनका साथी न होगा।" कु०पा० ३ सू आल इमरान आ० ५६।

"मुसलमानों को चाहिए कि **मुसलमानों को छोड़कर काफिरों को अपना दोस्त न बनावें**, और जो वैसा करेगा, तो उससे और अल्लाह से कोई सरोकार नहीं।" कु०पा० ३ सू आल इमरान आ० २८।।

"और अल्लाह काफिरों को नसीहत नहीं दिया करता।"

कु०पा० ३ सू० बकर रु० २६ आ० २६४।।

अरबी खुदा की किताब कुरान में अनेक ऐसे स्थल हैं जिनमें इस्लाम से भिन्न मजहब वालों से खुदा की नफरत स्पष्ट होती है तथा उसने अपने मजहब वालों को बार २ आदेश दिए हैं कि वे लोग गैर मुस्लिमों से नफरत करें, उनसे दोस्ती न करें तथा उनका विश्वास भी न करें। यहीं तक नहीं, उसने उन गैरमजहब वालों से मुसलमानों को लड़ने, उन पर सख्तियां करने तक का आदेश भी दिया है। प्रमाण स्वरूप निम्न आयतें प्रस्तुत हैं–

"मुसलमानो ! अपने आस पास के काफिरों से लड़ो, और चाहिए कि वह तुम से सख्ती मालूम करें·····।" कु०सू० तौबा रु० १६ आ० १२३

"काफिरों और मुनाफिकों से जहाद कर और उन पर सख्ती कर उनका ठिकाना तो नरक है और वह बुरी जगह है···· ··।"

(सूरते तहरीम आ० ९ पा० २८।)

"किताब वालें जो न खुदा को मानते हैं और न कयामत को, और न अल्लाह को और उसके पैगम्बर की हराम की हुई चीजों को हराम समझते हैं और न सच्चे दीन (इस्लाम) को मानते हैं, उनसे लड़ो, यहां तक कि जलील होकर (अपने हाथों से) जजिया दें ..।" (कु०सू० तौबा रु० ४ आ० २९)

नोट—जजिया वह टैक्स है जो मुसलमान शासक अपने खिलाफ मजहब वालों से लिया करते थे।

'ऐ पैगम्बर ! देहाती जो पीछे रहे। इनसे कह दो कि तुम बड़े लड़ने वालों के लिए बुलाए जाओगे। तुम उनसे लड़ो या वे मुसलमान हो जावें। कु० सूरते फतह आ० १६।

कुरान शरीफ के उपरोक्त स्थल यह स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त हैं कि अरबी खुदा के आदेश वा उपदेश मानव समाज में आपस में घृणा व द्वेष फैलाने वाले हैं। उन पर जो भी अन्ध विश्वास पूर्वक अमल करेगा। वह झगड़ालू बनेगा, समाज व देश में अशान्ति को जन्म देगा। आपस में मेल मिलाप से रहने की उच्च भावना के विनाश का कारण यह खुदाई मानी जाने वाली पुस्तकें ही हैं, जिनके कारण पिछला मानव जाति का इतिहास रक्त रंजित हुआ है। धार्मिक भिन्न विश्वास वालों को सहन न करना, उनसे लड़ने के आदेश देना, यहां तक कि वे लोग भी मुसलमान न बन जावे तब तक अपने पड़ौसियों पर सख्तियां करना, मुस्लिम शासकों द्वारा विभिन्न धर्मावलम्बियों से जजिया टैक्स इसी आधार पर वसूल करने का आदेश कुरान में देना और उस पर पिछले जमाने में मुस्लिम शासकों द्वारा अमल किया जाना, यह सब इस्लाम की सर्व धर्म समभाव के प्रति अनास्था का प्रमाण है। कुरान दूसरे मजहब वालों को बर्दाश्त नहीं करता है, उनको काफिर-दोजखी आदि अनेक कठोर शब्दों से प्रताड़ित करता है जबकि कुरानी खुदा ने स्वयं मानव समाज को अनेक विश्वासों, विभिन्न उपासना पद्धतियों को अपनाने वाला बनाने का उत्तर-दायित्व अपने ऊपर लिया है। अरबी खुदा के निम्न शब्द देखने योग्य हैं कुरान में लिखा है—

'और ऐ पैगम्बर ! तुम्हारा परवर्दिगार चाहता तो जितने आदमी जमीन की सतह में हैं सबके सब ईमान (इस्लाम पर) ले आते। तो क्या तुम लोगों को मजबूर कर सकते हो कि वह ईमान ले आवें।९९। किसी शख्स के हक में नहीं कि बिना हुक्म खुदा के ईमान ले आवें।"

१०। कु०पा० ११ सू० युनिस रु० १०।

"अगर खुदा चाहता तो वे शरीक न ठहराते और हमने तुमको इन पर निगहवान नहीं किया और न तुम इन पर वकील हो।"

१०७ कु० पा० ७ सू० अनआम रु० १३।

जब खुदा की ताकत के अन्दर यह बात थी कि दुनियां भर के लोग मुसलमान बन सकते थे और खुदा ने अपनी मर्जी से उनको मुसलमान न बनाकर मुशरिकीन व अन्य प्रकार की मजहबी विधियों द्वारा उपासना करने वाला बनने दिया या बना दिया तो फिर खुदा को इन आदेशों को देने की क्यों जरूरत पड़ गई कि—

"काफिरों से लड़ते रहो यहां तक कि फसाद न रहे और सब खुदा ही का दीन हो जावे ..।" ३९। कु पा० ९ सू० अनफाल रु० ४।

'इन (लोगों) की तबियत यह है कि जिस तरह खुद काफिर हो गए हैं उसी तरह तुम भी इन्कार करने लगो ताकि तुम एक ही तरह के हो जाओ। तो जब तक खुदा के रास्ते में देश त्याग (हिजरत) न कर जावें इनमें से मित्र न बनाओ। फिर अगर मुँह मोड़े तो उनको पकड़ो और जहां पाओ उनको कत्ल करो, उनमें से मित्र और सहायक न बनाना।" कु०पा० ५ सू० निसा रु० १२ आ० ८९।।

"फिर जब अदब के महीने निकल जावें तो मुशरिकों को जहां पाओ कत्ल करो। उनको घेर लो और हर घात की जगह उनकी ताक में बैठो। फिर अगर वह लोग तौबा करें और नमाज पढ़ें और खैरात करें तो उनका रास्ता छोड़ दो....," ५ सू० तौबा।

खुदा ही लोगों को शिरकती वा मुशरिफ बनने देता है और फिर उनको कत्ल कराने के आदेश मुसलमानों को देता है, वह खुद ही तरह-

तरह के मजहब कायम करता है और फिर उनको मार-२ कर मुसलमान बनाने के हुक्म देता है। जब वह कादिरे मुतलफ (सर्व शक्तिमान) होने का दावेदार है और दावा भी करता है कि मैं चाहूं तो दुनियां के सभी लोग मुसलमान बन जावें, तो फिर मार काट करा कर इस्लाम को फैलाने के क्यों आदेश देता है ? अपनी मर्जी से ही क्यों नहीं सभी को मुसलमान बना देता है ? ऐसा लगता है कि अरबी खुदा स्वयं कुछ नहीं कर सकता था, कोरी शेखी बघारता रहता था और फसाद फैलाता रहता था। क्या ऐसी बातें खुदा की हो सकती हैं जो अपनी सन्तान या प्रजा में झगड़े कराना पसन्द करता हो और शान्ति का शत्रु हो। कुरान जो अरबी सभ्यता का ग्रन्थ है तथा उसके मानने वाले, उसके अनुसार आचरण करने वाले, सर्व धर्म समभाव, सबसे प्रेम करना, सबके साथ सुख व शान्ति से रहना आदि विश्व प्रेम के आदेशों से रहित होने से प्राणीमात्र के लिए हितकारी नहीं हो सकते हैं।

काफिरों को दोस्त न बनाओ

विलक्षण बात है कि कुरान ने विश्वप्रेम के स्थान पर घृणा के बीज ही बोए हैं। दो प्रमाण इसके लिए प्रस्तुत किए जाते हैं - तथा प्रमाण सू० आल इमरान आ० २८। का पीछे दिया है (वहीं देखें)।

(अरबी खुदा ने आदेश दिया) ईमान वालो (मुसलमानों) **ईमान वालों को छोड़कर काफिरों को दोस्त मत बनाओ**। क्या तुम खुदा का जाहिर अपराध अपने ऊपर लेना चाहते हो।"

कु०पा० ५ सू० निसा० रु० २१ आ० १४४।

"जो खुदा की उतारी हुई (किताब) के मुताबिक हुक्म मैं दूं तो यही लोग काफिर हैं।" ४४॥

"मुसलमानो ! जिन्होंने तुम्हारे दीन को हँसी और खेल बना रखा है यानी जिनको तुमसे पहले किताब दी जा चुकी है, **और काफिरों को दोस्त मत बनाओ** और अगर तुम यकीन रखते हो तो खुदा से डरते रहो।" ५७। कु०पा० ६ सू० माइदा रु० ९॥

"क्या तुमने ऐसा समझ रखा है कि छूट जाओगे और अभी अल्लाह ने उन (मुसलमान) लोगों को देखा तक नहीं जो तुममें से कोशिशें करते हैं और अल्लाह और उसके पैगम्बर और मुसलमानों को छोड़कर किसी को अपना दोस्त नहीं बनाते ? और जो कुछ भी तुम लोग कर रहे हो अल्लाह को उसकी खबर है।" (६। कु पा० १० सू० तौबा रु० २।।

इन प्रमाणों से स्पष्ट है कि मुसलमानों को खुदा का हुक्म है कि गैर मुसलमानों (काफिरों) को दोस्त न बनावें, उनसे मेल मिलाप रखने की गलती न करें वरना वे काफिर दण्ड के योग्य (दोजखी) माने जायेंगे। इस प्रकार के जुझीले आदेश संसार की किसी भी धर्म पुस्तक में नहीं मिलेंगे। जैसे कुरान में दिए गए हैं। जब मुसलमान गैर मुसलमानों को दोस्त न बनावें तो न तो उनका विश्वास करेंगे और न गैर मुस्लिम ही उनका विश्वास कर सकेंगे।

क्या मानव समाज में प्रेम के स्थान पर नफरत-अविश्वास-झगड़े कराना-सुख प्रेम और शान्ति को नष्ट कराना भी किसी धर्म पुस्तक का काम है ? क्या ऐसी किताब मान्य हो सकती है ?

अन्य मजहबी औरतों के साथ खुदाई जुल्म

लड़ाई में अन्य मजहब वालों की बेगुनाह औरतों को पकड़ लाने और उनसे व्यभिचार बलात्कार गुण्डापन करने का भी अरबी मुसलमान खुदा ने हुक्म दिया था। लिखा है—

"ऐसी औरतें जिनका खाविन्द जिन्दा है उनको लेना भी हराम है, मगर जो कैद होकर तुम्हारे हाथ लगी हो उनके लिए तुमको खुदा का हुक्म है। और इनके सिवाय दूसरी सब औरतें हलाल हैं जिनको तुम माल देकर कैद में लाना चाहो ...।" २४। कुरान सूरे निसा० रुकू ४ पारा ५।।

कुरान में अरबी खुदा संसार की औरतों का दुश्मन था जिसने लड़ाई में विपक्ष की औरतों को व्यभिचार के लिए पकड़ लाने का अपने चेले मुसलमानों को आदेश दिया था।

वे मुसलमान मौलवी महा मूर्ख हैं जो इस अरबी खुदा को मुंसिफ दयालु और संसार भर के सभी लोगों का हितैषी रक्षक पालक और सभी का पिता के समान उत्थान चाहने वाला बताते हैं। तथा कुरान का यह कहना है कि "अल्लाह आदमियों पर बड़ी मिहरबानी और मुहब्बत रखता है।६५। सुहज्ज रु० ६। बिल्कुल गलत है। वह इन्सान का सबसे बड़ा दुश्मन है।

अरबी खुदा का मुस्लिम पक्षपात

विश्व पिता परमात्मा सदैव निष्पक्ष भाव से अपनी सन्तान का मार्ग दर्शन करता है सभी की सुख सुविधा का ध्यान रखता है। कर्मानुसार फल की व्यवस्था करता है और उसमें भी जीवों के कल्याण का प्रबन्ध रखता है किसी का भी पक्षपात नहीं करता है क्योंकि वह सर्वोच्च न्यायाधीश-जीवों का जन्मदाता-पालक एवं उनका व्यवस्थापक है। किन्तु अरबी खुदा में यह गुण सर्वथा नहीं मिलते हैं। वह केवल इस्लाम (अपने मुस्लिम भक्तों) का ही खुदा है, उन्हीं के मजहब का प्रचारक हैं, उन्ही की सुख सुविधा का ध्यान रखता है। इस्लाम से भिन्न मतानुयायी लोगों का परम शत्रु है। वह केवल मुसलमानों का मार्ग दर्शक व उन्हीं का रक्षक है। न्यायानुसार वह खुदाई की पवित्र गद्दी पर बैठने का अधिकारी नहीं हो सकता है।

हम कुरान में से अनेक स्थल उपस्थित करते हैं जिससे अरबी खुदा की सही स्थिति को सभी को समझने में सुविधा रहेगी। निम्न स्थल कुरान में स्वयं खुदा ने कहे हैं—

"दीन तो खुदा के नजदीक यही इस्लाम है....।" कु०पा० ३ सू० आल इमरान आ० १९।

"और जो व्यक्ति इस्लाम के सिवाय किसी और दीन को तलाश करे तो खुदा के यहां उसका वह दीन कबूल नहीं और वह कयामत के दिन नुकसान पाने वालों में होगा।" ८५।। कु०पा० ४ सू० आल इमरान रु० ९।

"हमने तुम्हारे लिए दीन इस्लाम को पसन्द किया....।"

कु०पा० ६ सू० मायदा ३।

"जो लोग अल्लाह और उसके पैगम्बर से लड़ते हैं। और फसाद की गरज से मुल्क में दौड़े फिरते हैं उनकी सजा तो यही है, कि मार डाले जायें या उनको सूली दी जाय या उनके हाथ पांव काट डाले जायें।" ३२ मायदा।

"जिसको खुदा सीधी राह दिखाना चाहता है उसके दिल इस्लाम के लिए खोल देता है....।" ।१२५। अनआम

".....तो हम उन लोगों के नाम लिख लेंगे जो डरते और जकात देते और जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं।"

कु०पा० ९ सू० आराफ रु० १९ आ० १५६।।

"लूट का माल तो खुदा और पैगम्बर का है।"

सू० अन्फाल आ० १।।

"फिर हम अपने पैगम्बरों को बचा लेते हैं और इसी तरह उन लोगों को जो ईमान लायें (मुसलमान बने) हमने अपने जिम्मे लाजिम कर लिया है कि ईमान वालों को बचा लिया करें।" यूनिस १०३ रु०१०।

"तुम उनसे लड़ो या वे मुसलमान हो जावें।"

कु०पा० २६ सूफतह आ०१६।।

उपरोक्त कुरान की आयतों में अरबी खुदा केवल इस्लाम का

पक्षपाती है। वह कुरान को अपनी किताब बताता है और लोगों को हर हथकन्डे से मुसलमान बनाने का यत्न करता है। मुसलमानों के ही नाम लिखने व उनको ही बयाने की गारण्टी करता है। ऐसे इस्लाम परस्त मुस्लिम पक्षपाती अरबी खुदा को संसार का कौन अक्लमन्द व्यक्ति न्याय प्रिय व विश्व की जनता का रक्षक पालक पोषक खुदा मानकर उस पर अपनी रक्षा व कल्याण के लिए भरोसा कर सकता है। बुद्धि से काम न लेने वाले ना समझ लोग ही भ्रान्तिवश ऐसी हस्ती को खुदा मानकर उसके उपासक बनना पसन्द कर सकते हैं और ऐसी किताब कुरान को खुदाई मान सकते हैं जिसने पवित्र खुदा को पक्षपाती घोषित कर रखा है। स्पष्ट है कि इस्लाम सर्व धर्म समभाव का पक्षपाती नहीं है क्योंकि वह कुरान के अनुसार आचरण करता है।

मुसलमानों के पाप माफ होंगे

मनुष्य अज्ञानतावश, लोभवश, दूसरों की कुसंगतिवश अथवा परिस्थितिवस ऐसे कर्म कर बैठता है जिससे दूसरों के अधिकार का हरण होता हो, दूसरों की शारीरिक, मानसिक, आर्थिक व सामाजिक हानि होती हो, अपनी ही उन्नति में बाधक कर्म हो, देशकाल, समाज व राज्य नियम के विरुद्ध हों, ऐसे कर्म पाप कर्म कहलाते हैं। इस प्रकार के कर्मों से बचने के लिए नैतिक, सामाजिक, राजनैतिक ईश्वरीय विचार होते हैं, जिन्हें पालन करना उपयुक्त होता है। उनकी अवहेलना करने पर दन्ड व्यवस्था लागू होती है ताकि व्यक्ति की दुष्कर्म करने की प्रवृत्ति मिटकर सही अर्थों में मनुष्य वा अच्छा नागरिक बन सके, साथ ही दूसरे लोग उस प्रकार के गलत काम करने से बचते रहें।

यदि गलत काम करने के अभ्यस्त व्यक्ति को यह ज्ञात हो जावे कि पाप कर्म करने के बाद उसका पाप क्षमा हो जावेगा। तो उसकी व

उसकी देखादेखी दूसरों की पाप कर्म करने की प्रवृत्ति बढ़ेगी, उस कर्म में निर्भयता होगी और सारा समाज दूषित हो जावेगा।

कुरान शरीफ में अरबी खुदा पापियों की पाप करने की प्रवृत्ति को पाप क्षमा कर देने का बचन देकर बहुत बढ़ाया है। इस सम्बन्ध में चन्द प्रमाण देखने योग्यहैं—

"और जो कोई बुरा काम करने या आप अपनी जान पर जुल्म करे, फिर अल्लाह से माफी मांगे तो अल्लाह को बख्शने वाला मिहरबान पावेगा।" कु०पा० ५ सू० निसा रु० १६ आ० ११०॥

"खुदा जिसको चाहे माफ करे और जिसको चाहे सजा दे और आसमान और जमीन और जो कुछ आसमान व जमीन के बीच में है सब अल्लाह ही के अख्तियार में है।" सू० मायदा १८।

"और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने सुकर्म किए हम जरूर उनके पाप उनसे दूर कर देंगे और इनको अच्छे से अच्छा फल देंगे।"

७। कु०पा० २० सू० अनकबूत

"अल्लाह तमाम पापों को क्षमा कर देता है। वह बख्शने वाला मेहरबान है।" ५३ सू० जुमर रु० ६।

"आसमान और जमीन की बादशाही अल्लाह ही की है जिसको चाहे माफ करे और जिसको चाहे सजा दे ...।" १४ कु०पा० २६ सू० फतह॥

जिस प्रकार कर्मों का दण्ड देना वा इनाम देना, दोजख या जन्नत में भेजना कर्मों पर निर्भर नहीं होता है बल्कि अरबी खुदा की स्वेच्छा चारिता वा मर्जी पर निर्भर करता है उसी प्रकार जिसे चाहे माफ करना भी खुदा की मर्जी पर निर्भर करता है। किन्तु यह कृपा भी माफ करने की केवल मुसलमानों पर ही खुदा की होगी, अन्य धर्मियों पर नहीं

गी । चाहे जैसा वे पाप कर डालें और खुदा से तौबा कर लें तो बस पाप माफ हो जावेंगे। इससे बड़ा आश्वासन गुनाह दूर करने का और कहीं न मिल सकेगा। मुसलमानों में अत्याचार की प्रवृत्ति का प्रचार इसी के आधार पर हुआ है। यदि सभी के साथ एक सा व्यवहार होता, कुकर्मों का कठोर दण्ड सभी को निष्पक्ष भाव से एकसा मिलता तो लोग पापों से डरने लगते। पर इस्लामी पक्षपात के कारण जब खुदा ही मुसलमानों के हाथ बिका हुआ है तो फिर न्याय की आशा उससे नहीं की जा सकती है। इसलिए हम कहते हैं कि कुरान का खुदा अरबी डिवीजन का केवल मुसलमानों का खुदा है, वह संसार के लोगों का खुदा नहीं माना जा सकता है न इस्लाम विश्वधर्म बन सकता है।

★

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
प्रतिग्रहण क्रमांक ...
दयानन्द महिला महावि

जनवरी सन् १९८५ से चालू

बौद्धमत का भण्डाफोड़	३.००
हिन्दू मन्दिरों की लूट	१५.००
कुरान की छानबीन	१२.००
कुरान प्रकाश	७.००
गीता विवेचन	७.००
भागवत समीक्षा	७.००
बाइबिल दर्पण	६.००
कुरान पर १७६ प्रश्न	३.००
असत्य पर सत्य की विजय	५.५०
मौलवी हार गया	२.५०
ईश्वर सिद्धि	५.००
वैदिक यज्ञ विज्ञान	३.५०
जैन मत समीक्षा	५.००
मुनि समाज मुखमर्दन	४.५०
अवतार रहस्य	३.५०
मूर्ति पूजा खण्डन	४.५०
टोंक क शास्त्रार्थ	३.२५
माता पुत्री का सम्वाद	३.५०
भारतीय शिष्टाचार	२.५०
शिवलिंग पूजा क्यों ?	४.५०
अद्वैतवाद मीमांसा	३.००
प्रार्थना भजन भास्कर	३.५०
यजुर्वेद अ० ४० सव्याख्या	१.२०
यजुर्वेद अ० ३१ सव्याख्या	५.५०
वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है	२.००
पुराण किसने बनाये ?	३.००
माधवाचार्य को डबल उत्तर	२.२५
तुलसी और शालिगराम	.५०
दुर्गा पर नर बलि	.६०
कुरान और अन्य मजहब	.८०
स्वर्ग विवेचन	.७५
हनुमान जी बन्दर नहीं थे	.९०
कुरान खुदाई कैसे	.६५
शैतान की कहानी	.५०
कुरान में परस्पर विरोधी स्थल	.३०
खुदा का रोजनामचा	.३०

डा० श्रीराम आर्य प्रणीत ग्रन्थ

पौराणिक मुख चपेटिका	.५०
पौराणिक गप्प दीपिका	१.५०
इस्लाम दर्शन	१.५०
कबीर मत गर्वमर्दन	३.५०
ब्रह्माकुमारी मत खण्डन	१.००
स.प्र. की छीछालेदड़ का उत्तर	२.००
महान पुरुष कैसे बनते हैं	३.५०
सव्याख्या विवाह पद्धति	४.२५
इस्लाम में नारी की दुर्गति	१.२५
कुरान में पुर्नजन्म	.८०
कुरान में विज्ञान विरुद्ध स्थल	.८०
चोटी ३० पैसे, जनेऊ ६० पैसे	
कुरान के विचारणीय स्थल	२.००
पुराणों के कृष्ण	१.००
शिव जी के चार विलक्षण बेटे	१.००
मृतक श्राद्ध खण्डन	.७५
विभिन्न मतों में ईश्वर	.९०
गीता पर ४२ प्रश्न	.७५
शास्त्रार्थ के चेलेंज का उत्तर	१.००
पौराणिक कीर्तन पाखण्ड है	.७५
बाइबिल पर सप्रमाण ३१ प्रश्न	.५०
अर्थ सहित वैदिक संध्या	.७५
सनातन धर्म में नियोग व्यवस्था	.७५
नारी पर मजहबी अत्याचार	.५०
हँसामत का पोल खाता	.५०
नृसिंह अवतार वध	.३०
मेरठ का जंगली कुत्ता	४.००
अवतारवाद पर ३१ प्रश्न	.३०
ईसा मुक्तिदाता नहीं था	.३०
ईशा और मरियम	.३०
मूर्ति पूजा पर ३१ प्रश्न	.३०
ईसाई मत का पोलखाता	.५०
मृतक श्राद्ध पर २१ प्रश्न	.३०
तम्बाकू में विष,	.३०
अण्डा और मांस में विष	.३०

पता—वैदिक साहित्य प्रकाशन, कासगंज (एटा) उ० प्र० भारतवर्ष

ओ३म्

खण्डन मण्डन ग्रन्थमाला पुष्प सं० ७९

कुरान के विचारणीय स्थल

लेखक—

डा० श्रीराम आर्य

कासगंज (एटा) उ० प्र०

प्रकाशक

वैदिक साहित्य प्रकाशन

कासगंज (एटा) उत्तर-प्रदेश भारतवर्ष

दयानन्दाब्द १६१

प्रथम बार आर्य संवत् १९७२९४९०८६ [मूल्य २)७५

११०० सन् १९८६ ई०

ओ३म
गुरु विरजानन्द दण्डी
संदर्भ पुस्तकालय
दयानंद महिला महाविद्यालय
कुरुक्षेत्र
वर्गीकरण नम्बर .....
पु. परिग्रहण क्रमांक 5328

* ओ३म् *

खण्डन मण्डन ग्रन्थमाला पुष्प सं०

टपरी
सम्पूर्ण पुस्तकालय
परिग्रहण क्रमांक 5328

कुरान के विचारणीय स्थल

लेखक

आचार्य डा० श्रीराम आर्य
कासगंज (एटा) उ० प्र०

प्रकाशक

वैदिक साहित्य प्रकाशन
कासगंज (एटा) उ० प्र० भारतवर्ष

दयानन्दाब्द १६१

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८६

प्रथम बार ११००] सन् १९८६ मूल्य रु० ४.००]

कुरान में संशोधन-

जब हम एक आयत को बदल कर उसकी जगह दूसरी आयत उतारते हैं, और जो हुक्म उतरता है, उसको वही वखूबी जानता है।"

कु०पा० १४ सू० नहल आ० १०१

समीक्षा—विद्वान व्यक्ति या मजिस्ट्रेट सदैव एक ही बार में सही बात कहता है, वह अपने हुक्मों में बार २ संशोधन नहीं किया करता है, किन्तु अरबी खुदा को बार-बार अपनी किताब में अपनी बातों को गलत मालूम होने पर बदलना पड़ता था। यह ताज्जुब की बात है। इससे अरबी खुदा की योग्यता को समझा जा सकता है। इससे यह भी स्पष्ट है कि पहिली बार में उतारी गई आयतों वाला यह असली कुरान नहीं है। यह तो संशोधित कुरान है।

खुदा को कर्ज दो-

"खुशदिली से खुदा को कर्ज देते रहो, हम जरूर तुम्हारे गुनाह माफ कर देंगे।" (कु०सू० मायदा आ० १२)

"ऐसा कौन है जो अल्लाह को खुशदिली से कर्ज दे, वह उसके लिए दूना कर दे, और उसके लिए इज्जत का फल है।"

(११। कु०पा० २७ सूरेहदीद रुकू २)

"अगर तुम अल्लाह को खुशदिली से उधार दो तो तुमको वह वह दूना करेगा और तुम्हारे पाप क्षमा करेगा और अल्लाह कदर जानने वाला दयालु है.....।" (कु०पा०२८ सू० तगावुन आ० १७)

"जिसने नेकी की उसका दसगुना उसे मिलेगा।"

(कु०पा०८ सू० अनआम आ० १६०)

"कोई है जो खुदा को खुशदिली से कर्ज दे कि उसके कर्ज को उसके लिए कई गुना बढ़ा देगा...।"

(कु०पा० २ सू० बकर रु० ३२ आ० २४५)

समीक्षा—इन आयतों में खुदा कर्ज की रकम को दुगना या कई गुना तक मय सूद बढ़ाकर देने का वायदा करता है। कोई एक नियम खुदा का नहीं है। पता नहीं अरबी खुदा को कर्ज लेने की क्यों जरूरत पड़ गई? साहूकारी करने वालों को अपना पैसा लगाकर धन कमाने का बढ़िया प्रलोभन खुदा ने दिया है। पर एक शक है कि अगर खुदा कर्ज लेकर असल रकम भी वापिस न करे तो साहूकार पैसा किससे वसूल करेगा? उत्तर होगा कि साहूकार रुपया खुदा को देते समय किसी मालदार खुदा परस्त या मुल्ला की जमानत सरकारी दस्तावेज पर करा लिया करे। मालदारों के पाप माफ कराने को खुदा को कर्ज देना ही चाहिए। गरीबों की मौत है।

कुरान सिर्फ मक्का वालों के लिए था—

"और हे पैगम्बर! हमने इस (कुरान) को इस वजह से उतारा है कि तुम मक्का वालों को और जो लोग उसके आस-पास रहते हैं, उनको डराओ।" (कु०पा० ७ सू० अनआम रु० ११ आ० ९२।)

"और उसी तरह अरबी कुरान हमने उतारा ताकि तू मक्के के रहने वालों को और जो लोग मक्के के आस-पास रहते हैं उनको डरावे और कयामत के दिन की मुसीबत से डरावे।"

कु०पा० २५ सू० शूरा रु० १ आ० ७।

"हमने इस कुरान को अरबी भाषा में उतारा है ताकि तुम समझ सको।" २। कु०पा० १२ सू० यूसुफ।

समीक्षा—कुरान ने स्वयं ऊपर की आयतों में घोषणा की है कि वह केवल मक्का और उसके इर्द-गिर्द कुछ दूरी तक रहने वालों के लिए ही बनाया गया था जो अरबी भाषा जानते थे। वह दुनियां के लोगों के लिए न तो बनाया गया था और न उसको अरब के अलावा अन्य देशों के रहने वालों को मानना ही चाहिए। उसका अन्य देशों में

प्रचार करना कुरान के ही खिलाफ होने से कुफ्र है। कुरान में अन्यत्र भी लिखा है—

"अगर तुम्हारा परवर्दिगार चाहता तो लोगों को एक ही दीन का कर देता···।" कु०पा० १२ सू० हूद आ० ११८॥

"और (दीन के दो रास्ते हैं) एक सीधा खुदा तक है और दूसरा टेढ़ा, और खुदा चाहता तो तुम सब को सीधा रास्ता दिखा देता।"

९। कु०पा० १४ सू० नहल॥

"दीन तो खुदा के नजदीक इस्लाम है।"

सू० आल इमरान आ० १९।

"और जो व्यक्ति इस्लाम के अलावा किसी और दीन को तलाश करे तो खुदा के यहां उसका वह दीन कबूल नहीं और कयामत के दिन वह नुकसान पाने वालों में होगा।"

कु० सू० आल इमरान आ० ८५।

"खुदा चाहता तो तुम (सब) को एक ही गिरोह बना देता मगर वह जिसको चाहता है गुमराह करता है और जिसको चाहता है सुझाता है।" ९३। सू० नहल।

इन ऊपर की आयतों में अरबी खुदा कहता है कि खुदा की पसन्द का दीन केवल इस्लाम है और खुदा जिसको चाहता है उसे मुसलमान बनाता है। उसने केवल अरब में वह भी मक्का और उसके आस-पास रहने वालों को मुसलमान बनाने के लिए अरबी में कुरान उतारा था ताकि वे उसे समझ कर इस्लाम कबूल कर लेवें। खुदा नहीं चाहता है कि दुनियां के और लोग मुसलमान बनें। इसी लिए उसने कुरान को दूसरी भाषाओं में नहीं बनाया था। स्पष्ट है कि कुरान का गैर मुसलमानों में व दुनियां में प्रचार करना खुदा के हुक्म के खिलाफ होने से गुनाह है।

कुरान में कई खुदाओं का वर्णन है–

इस्लाम के अनुसार खुदा ने ही कुरान उतारा था, पर उसमें कई स्थल ऐसे हैं जिनसे कम से कम दो खुदाओं का होना साबित होता है। जैसे—

अरबी खुदा कहता है 'खुदा के सिवाय किसी की पूजा मत करो, मैं उसी की ओर से तुमको डराता हूं और खुश खबरी सुनाता हूं।'

कु०पा ११ सू० हूद आ० २॥

"खुदा की कसम है तुमसे पहिले हमने बहुत सी उम्मतों (गिरोहों) की तरफ पैगम्बर भेजे....।"

कु०पा० १४ सू० नहल रु० ८ आ० ६३।

"और इन्कारी कहने लगे कि हमको वह घड़ी न आवेगी। पोशीदा बातों के जानने वाले अपने परवर्दिगार की कसम जरूर आवेगी।" ३। पा० २२ सू० सबा।

"तेरे परवर्दिगार की कसम हम इन से जरूर पूछेंगे।"

९२। कु०पा० १४ सू० हिज्र रु० ६।

"ऐ मुहम्मद ! खुदा तुझको माफ करे।"

कु० सू० तौबा आ० ४३।

"खुदा इनको गैरत करे किधर को भटके चले जा रहे हैं।"

३०। सू० तौबा।

पुनः खुदा कहता है "तो मैं पूरब और पश्चिम के परवर्दिगार की कसम खाता हूं कि हम उस पर सामर्थ रखते हैं।"

कु०पा० २९ सू० मआरिज आ० ४०।

समीक्षा—इसमें खुदा की कसम खाने वाला, उसी की ओर से लोगों को डराने वाला बड़े अरबी खुदा से कोई छोटा खुदा है जो लोगों को अपने से बड़े खुदा की ओर से संदेश देता है। कसम खाने

वाला और जिसकी कसम खाई जाती है प्रथक २ होते हैं। कसम हमेशा अपने से बड़े की खाई जाती है। स्पष्ट है कि कुरान बनाने वाले अरबी डिवीजन के खुदा से भी बड़ा कोई खुदा और भी था। इससे कुरानी कलमा गलत हो जाता है कि—

'ला इलाहा इल्लिल्लाह' अर्थात् नहीं है कोई खुदा; खुदा सिर्फ एक है अथवा कुरान खुदा ने नहीं बनाया था किसी इन्सान ने बनाया व खुदा की कसमें खायी थीं।

अरबी खुदा ने गाली दी

खुदा मियां ने कहा "(ऐ पैगम्बर) किताब वाले और (अरब) के जाहिलों से कहो कि तुम भी इस्लाम को मानते हो (या नहीं)।

कु० पा० ३ सूरते आल इमरान आ० २०।

समीक्षा—खुदा ने खुद ही जाहिल पैदा किए और फिर उनको जाहिल कहकर गाली भी दी क्या यही खुदा की कब्लियत है। उसे जाहिल न पैदा करके भले आदमी पैदा करने में क्या परेशानी थी। एक बात इससे साफ है कि कुरान अरब वालों को जाहिल मानता है। हमको अफसोस है कि हिन्दुस्तान का मुसलमान कितना ना समझ है कि अपने को उन्हीं अरबी जाहिलों की सन्तान बताता है और अरबी जाहिलों के मजहब को मानता है, जब कि वह भारत के हिन्दुओं की नस्ल से है। उसका खून का रिश्ता हिन्दुओं से है। कुरान भी अरबी जाहिलों के लिए बनाया गया था यह कुरान में ही लिखा है। यह पढ़े लिखे लोगों के लिए नहीं था और न है।

खुदा सब कुछ नहीं जान पाता है

"खुदा उस दिन दोजख (नरक) से पूछेगा कि तू मर चुका? वह कहेगा क्या कुछ और भी बाकी है?"

कु० पा० २६ सू० काफ रु० ३ आ० २९।

कु०सू० तौबा रु० १४ आ० ११५ में खुदा को सर्वज्ञ बताया गया है।

समीक्षा—अरबी खुदा को सर्वज्ञ बताना गलत है, वह बिना पूछे कुछ भी नहीं जान पाता है कुरान ने खुदा मियां की सर्वज्ञता पर इस आयत द्वारा करारी चोट की है।

असली शैतान अरबी खुदा है या इब्लीस ?

"क्या तुमने नहीं देखा कि हमने शैतानों को काफिरों पर छोड़ रखा है कि वह उनको उकसाते रहते हैं।"

८३। कु० सू० मरियम रु० ६।

'शैतान लोगों में झगड़ा इलवाता है और शैतान आदमी का खुला बैरी है।" कु०पा० १५ सू० बनी इसराइल रु० ६ आ० ५३

समीक्षा—इन्सान को गलत रास्ते पर डालने के लिए अरबी खुदा ने नालायक शैतान को गैर मुसलमानों के पीछे लगा दिया है ताकि वे नेक रास्ते पर न चल सकें। तब असली दुश्मन मनुष्यों का अरबी खुदा हुआ, वही जबर्दस्त शैतान साबित है। ऐसे बुरे आदमी को कौन समझदार व्यक्ति खुदा मानेगा।

कुरान में सूअर खाना भी सशर्त जायज है

सूअर को सबसे गन्दा जानवर माना गया है, क्योंकि वह पाखाना खाता है। उसके जिस्म के सभी अंगों के परमाणु पाखाने की गन्दगी से सने होते हैं। कुरान शरीफ में सूअर का मांस खाने की शर्त के साथ आज्ञा दी गई है जैसे—

"कहा कि कोई खाने वाला कुछ खाये, मेरी तरफ जो खुदा का पैगाम आया है उसमें तो मैं कोई चीज हराम नहीं पाता मगर यह कि वह चीज मुर्दार हो, या बहता खून, या सूअर का मांस, यह चीजें

नापाक हैं, या उदूली हुक्मी का सबब हो या खुदा के सिवाय किसी दूसरे के नाम पर जिबह हो। उस पर भी जो शख्स लाचार हो तो तेरा परवर्दिगार माफ करने वाला महरबान है।"

कु०पा० ८ सू० अनआम रु० १८ आ० १४५।

इसी प्रकार के आदेस कु० में सूरत वकर आ० १७३। सू० नहल आ११५। सू० मायदा आ० ३ व सू० अनआम आ० ११९ व १४६ में भी दिए गए हैं।

इसका अर्थ यह हुआ कि साधारणतया सूअर का मांस नहीं खाना चाहिए किन्तु जोर की भूख होने के नाम पर सूअर भी खाना जायज है। हमारी समझ में पाखाना खाने या पाखाना खाने वाले सूअर को खाने में ज्यादा फर्क नही होता है। पता नहीं आम मुसलमान सूअर के नाम से क्यों चिढ़ते हैं। वह तो उनकी भूख मिटाने में जरूरत पर मददगार होता है।

गैर मुस्लिमों से दोस्ती न करने का आदेश

"मुसलमानों को चाहिए कि मुसलमानों को छोड़कर काफिरों को अपना दोस्त न बनावें। और जो वैसा करेगा तो उससे और अल्लाह से कोई सरोकार नहीं। मगर किसी तरह उससे बचना चाहो तो जायज है।" कु०पा०३ सू० आल इमरान रु० ३ आ० २८।

"ईमान वालो (मुसलमानो)! ईमान वालों को छोड़कर काफिरों को अपना दोस्त मत बनाओ क्या तुम जाहिर खुदा का अपराध अपने ऊपर लेना चाहते हो।"

कु०पा० ५ सू० निसा रु० ११ आ० १४४।

समीक्षा—यही कारण है कि मुसलमान हिन्दुओं के कभी सच्चे दोस्त नही बन सकते हैं।

गैर मुस्लिमों पर जुल्म के हुक्म

"फिर जब अदब के महीने निकल जावें तो मुशरिकों को जहां पाओ कत्ल करो। उनको घेर लो हर घात और की जगह उनकी ताक में बैठो ।५। ऐ पैगम्बर ! काफिरों और मुनाफिकों से जहाद (युद्ध) करो और उन पर सख्ती करो और उनका ठिकाना नरक है "।७३। मुसलमानो ! आस पास के काफिरों से लड़ो और चाहिए कि वह तुमसे सख्ती मालुम करें ।१२३। कु०पा० १० सू० तौबा ।

"काफिरों से लड़ते रहो, यहां तक कि फसाद न रहे और सब खुदा ही का दीन इस्लाम हो जावे ।"

कु०पा० ६ सू० अनफाल रु० ४ आ० ३६।

समीक्षा इन आयतों में कुरान ने मुसलमानों के ऊपर हर तरह के अत्याचार करने का आदेश दिया है तथा जुल्म करके उनको मुसलमान बना लेने को कहा गया है । इस्लाम का इतिहास इस बात का सबूत है कि कुरान के मानने वालों ने यहूदियों, ईसाइयों, पारसियों व हिन्दुओं पर बड़े २ जुल्म ढाये हैं तथा तलवार के जोर पर इस्लाम का प्रचार किया है । भारत वर्ष जैसे शान्ति प्रिय देश की सभ्यता वाले हिन्दुओं पर भी मुस्लिम राजाओं ने भयानक अत्याचार सदैव ढाए हैं । हिन्दुओं को सदैव इस्लाम से सावधान रहना चाहिए ।

खुदा के रहने की जगह व पृथ्वी से दूरी

"परहेजगार (मुसलमान) जन्नत के बागों में और नहरों में रहेंगे ।५४। सच्ची बैठक में बादशाह (खुदा) के पास जिसका सब पर कब्जा है ।५५।" कु० सू० कमर आ० २७ ।

"सो खुदा सच्चा बादशाह बहुत ऊँचा है । वही बड़े तख्त का मालिक है ।" सू० मोमिनून अ० ११६।

इसमें खुदा को जन्नत में एक कमरे में रहने वाला बताया गया है

वह तख्त पर ऊँचा बैठता है। कुरान में लिखा है "जिसने आसमान और जमीन को और जो कुछ आसमान और जमीन के बीच में है छः दिन में पैदा किया, फिर तख्त पर जा बैठा।"

कु०पा० १९ सू० फुर्कान रु० ५ आ० ५९।

"खुदा के मुकाबिले में जो सीढ़ियों का मालिक है।३। उनसे फरिश्ते और रूहें उसकी तरफ एक दिन ये चढ़ते हैं और उसका अन्दाज पचास हजार साल का है।" ४। कु०पा० २९ सू० मआरिज।

इसमें खुदा को जन्नत में तख्त पर बैठने वाला बताया गया है तथा उसकी इस जमीन से दूरी भी बता दी गई है। यदि रूहों के चढ़ने की रफ्तार भी बता दी गई होती तो खुदा के मकान की दूरी ठीक २ मालुम की जा सकती थी। अरबी खुदा सर्व व्यापक नहीं है, यह साफ जाहिर है। वह इस जमीन पर भी नहीं रहता है, परदेशी है।

इस्लामी जन्नत में क्या मिलेगा

"जन्नत में ऐसी पानी की नहरें हैं जिनका स्वाद नहीं बदला है, शराब की नहरें, शहद की नहरें हैं, हर तरह के मेवे।"

सूरत सू० मुहम्मद पा० २६।

"उनके पास हूरें होंगीं जिन पर जन्नत वासियों से पहिले किसी ने हाथ नहीं डाला होगा।" कु० सू० रहमान।

"खुदा उनका मुसलमानों से ब्याह करा देगा।" कु०सू० नूर आ० २०। "वहां लौंडे मिलेंगे जो हमेशा लौंडे ही बने रहेंगे।" कु०सू० वाकिया आ० १८। 'मुसलमान शराबें पियेंगे जिनमें कपूर मिला होगा।' ५। 'शराबों में सोंठ मिली होगी।' १७। कु०सू० दहर। 'उनमें मुहर कस्तूरी की लगी होगी।" २६ कु सू० तनफीफ। 'हर तरह के पक्षी का मांस खुदा खिलावेगा।" २२। कु०पा० २७ सुवा-

किया। "शराब चांदी के गिलासों में पिलाई जावेगी जो काँच की तरह चमकते होंगे।" सू० दहर आ० १५। "मुसलमानों को सोने के कंगन पहिनाए जायेंगे।" ३३ कु०सू० फातिर पा० २२। "रेशमी महीन और मोटी पोशाक पहिनने को मिलेगी व चांदी के गहने मिलेंगे। खूबसूरत मोती जैसे लौंडे इर्द-गिर्द फिरते रहेंगे। सू दहर। नौजवान बड़ी २ आंखों वाली औरतें हम उम्र। सू०नबा।

कुरान के उपरोक्त संक्षिप्त वर्णन को खुलासा करते हुए मिर्जा हैरत देहलवी ने अपनी किताब में लिखा है—

"हजरत अब्दुल्ला बिन उमर ने फरमाया कि स्वर्ग में हर मुसलमान को ५०० हूरें ४००० क्वारी औरतें तथा ८००० व्याहता औरतें खुदा देगा और उनसे ब्याह करा देगा। जन्नत में एक बाजार है जहां पुरुषों और औरतों के हुस्न का व्यापार (रण्डीबाजी) होती है। परन्तु जब कोई व्यक्ति किसी सुन्दरी की ख्वाहिश करेगा तो वह उस बाजार में जावेगा जहां बड़ी २ आंखों वाली हूरें जमा हैं। वे कहेंगी कि मुबारिक है वह शख्स जो हमारा हो और हम उसकी हैं।"

कुरान परिचय पृ० ८३।

समीक्षा—जन्नत में हर मुस्लिम औरत को कितने मर्द अय्याशी को मिलेंगे यह भी खोल दिया जाय तो ठीक था। यह वह जन्नत (स्वर्ग) है जिसमें जाने को हर मुसलमान और मर्द रात दिन नमाज पढ़ २ कर दीवाने फिरते हैं।

हमारा कहना है कि मुस्लिम औरतें जन्नत में न जावें वरना सौतिया डाह से जल-जलकर मरना होगा, बड़ी दुर्गति होगी। और भी लिखा है—

"जो लोग ईमान लाये और अच्छे काम किए, हम उनको ऐसे बागों में दाखिल करेंगे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। वे उनमें

हमेशा रहेंगे और उनके लिए बीबियां साफ सुथरी होंगी।"

कु०पा० ५ सू० निसा रु० ८ आ० ५७।

"और उनके पास नीची नजर वाली बीबियां (हूरें) होंगी और हमउम्र होंगी।" कु०पा० २३ सू० साद रु० ४ आ० ५२।

ऐसा ही होगा और बड़ी २ आंखों वाली हूरों से हम उनका ब्याह कर देंगे।" कु०पा० २५ सू० दुःखान आ० ५४।

जन्नत में इगलाम बाजी होगी। (दुर्रेमुख्तार मिश्री जिल्द ३ पृ७१)

"और हूरें बड़ी २ आंखों वाली, जैसे छिपे हुए मोती।२३। हमने हूरों की एक खास किस्म पैदा की है।३५। फिर हमने उनको क्वारी बनाया है।३६। प्यारी प्यारी हम उम्र वाली।३७। यह सब दाहिनी तरफ वालों (मुसलमानों) के लिए है।३८।

कु०पा० २७ सू० वाकिया रु० १।

"खाने को अंगूर और नौजवान औरतें हमउम्र।३३। और छलकते हुए प्याले (शराब के)।" ३४। कु०पा० ३० सू० नवा रु० २।

समीक्षा—जन्नत में खूबसूरत लोंडों को मियां लोग कैसे इस्तेमाल करेंगे। हम उम्र औरतें मिलने का क्या यह मतलब हैं कि ६० साला मियां को ६० साला औरत व १६ साला को १६ साल की छोकरी मिलेगी। यदि बिना निकाह के ही जन्नती उनको इस्तेमाल करने लगे तो क्या यह गुनाह होगा? क्यों कि जन्नत में गुनाह या सबाब नाम की कोई बात नहीं होगी। कोई बतावे कि इस्लामी भी जन्नत और अरबी वेश्यालयों में क्या अंतर होगा?

दुनियाँ कितने दिन में बनी थी

"जब वह (खुदा) किसी काम को करना ठान लेता है तो बस उसे फर्मा देता है कि 'हो' और वह हो जाता है।"

कु०पा०३ सू० आल इमरान आ० ४७।

समीक्षा—इसका मतलब यह हुआ कि खुदा को कोई मेहनत नहीं करनी पड़ती है, बस ही कहने ही से सब कुछ खुद ही बन जाता है पर यह नहीं खोला कि खुदा मियां किससे हो कहते हैं, कौन उसे सुनकर क्या हो जाता है। खुदा की आवाज सुनने वाला भी तो कोई चाहिए। यदि कोई सुनने वाला नहीं होता तो खुदा मन में सोचकर ही क्यों सभी कुछ बना लेता था। खुदा का यह दावा कुरान से ही गलत साबित हो जाता है। एक अन्य स्थान पर खुदा मियां कहते हैं—

"तुम्हारा परवर्दिगार वही अल्लाह है जिसने ६ दिन में जमीन और आसमान को बनाया, फिर अर्श (तख्त) पर जा बैठा···।"

कु०पा० ११ सू० यूनिस आ० ३।

"और हमने आसमानों को अपने हाथों की ताकत से बनाया और हम सामर्थ वाले हैं।"

इन आयतों में अरबी खुदा कहता है कि जमीन आसमान सभी कुछ उसने अपने हाथों की ताकत से ६ दिन में बनाया था। अर्थात् 'हो' कहकर बनाने का उसका दावा झूंठा था। कुरान पारा २४ सू० हामीम सज्दह में आयत ९-१० व ११ में खुदा ने सभी कुछ बनाने में आठ दिन लगाने की बात की है जो ६ दिन में बनाने की बात को भी झूंठा साबित कर देती है।

तलाक का विचित्र तरीका

"मर्द द्वारा औरत को इस्लाम में तीन बार तलाक दी जाती है। तीसरी तलाक के बाद तलाक पूरी होती है। कुरान में लिखा है "अब अगर औरत को तीसरी बार तलाक दे दी तो उसके बाद जब तक औरत दूसरे पति के साथ निकाह न कर ले उसके पहिले पति के लिए हलाल नहीं (हो सकती) हां अगर उसका दूसरा पति उससे

विषय भोग करके तलाक दे दे तो मियां बीबी पर कुछ पाप नहीं कि फिर दूसरे से (परस्पर) प्रेम कर ले बशर्ते कि दोनों को आशा हो कि अल्लाह की बँधी हुई हद पर कायम रह सकेंगे।"

कु०पा० २ सू० बकर रु० २६।

समीक्षा—इस आयत पर कुरान के भाष्यकार मौलवी अहमद बशीर साहब एम. ए. कुरान की टीका में फुटनोट में लिखते हैं—

"तलाक का यह दस्तूर है कि जब कोई मुसलमान मर्द अपनी औरत को तलाक देता है तो कम से कम दो आदमियों के सामने तलाक देता है और एक महीने बाद दूसरी तलाक भी इसी तरह देता है। यहां तक तो मियां बीबी में सुलहनामा हो सकता है। इसके एक महीने बाद तीसरी तलाक दी जाती है। इस तलाक के देने के बाद फिर मर्द उस औरत के पास नहीं जा सकता। यह औरत ३ माह १० दिन के बाद निकाह कर सकती है। दूसरे पति के साथ निकाह हो जाने पर अगर दूसरा पति तलाक दे दे तो सिर्फ इस हालत में कि वह दूसरे पति के साथ में विषय भोग कर चुकी हो (हम बिस्तर हो चुकी हो) अपने पहिले पति के साथ फिर निकाह कर सकती है। परन्तु जब तक किसी दूसरे के साथ निकाह करके विषय भोग न कर ले (यानी हम बिस्तर न होले) कदापि पूर्व पति से निकाह नहीं कर सकती।'

समीक्षा—किसी गैर आदमी से सम्भोग कराके आने के बाद ही पूर्व पति उसे स्वीकार कर सकता है अन्यथा नहीं, यह शर्त क्यों लगाई गई है, हम समझ नहीं सके। क्या इससे तलाक शुदा औरत में कोई खास खुशबू या जायका पैदा हो जाता है जिससे पहिले पति के लिए वह लेने योग्य हो जाती है। हमारी निगाह में यह कुकर्म मुस्लिम नारी के लिए तलाक के नाम पर अत्याचार है। इसका विरोध होना चाहिए।

खुदा बढ़िया मक्कर करता है

कुरान में खुदा को बढ़िया फरेबी लिखा है यथा—

"और जब फरेब बनाते तेरे काफिर तुझको बैठा दे या मार डाले या निकाल दें और वह फरेब करते थे और अल्लाह भी फरेब करता था और अल्लाह का फरेब सबसे बहतर है।"

कु० सूरे अनफाल आ० ३०।

"और फरेब किया इन काफिरों ने और फरेब किया अल्लाह ने और अल्लाह का फरेब सबसे बहतर है।"

कु० सू० आल इमरान आ० ५४॥

"काफिर जो हैं दगाबजी करते अल्लाह से, हालांकि खुदा उन्हीं को धोखा दे रहा है॥" कु० सूरे निसा आ० १४२।

"और हमने यूसुफ के फायदे के लिए मकर किया।"

कु० सू० यूसुफ आ० ७६।

समीक्षा – इन प्रमाणों में खुदा ने अपने को मक्र (धोखा-दगा) करने वालों में सबसे ऊँचा बताया है और कई बार लोगों के साथ दगा करने का वर्णन शेखी के साथ किया है। उससे साफ है कि दगा करना इस्लाम में कोई बुरी बात नहीं मानी जाती है।

आपस में बीबियाँ बदल लेने की मन्जूरी

"अगर तुम्हारा इरादा एक बीबी बदलकर उसकी जगह दूसरी बीबी करने का हो तो तुमने पहिली बीबी को बहुत सा माल दे दिया हो तो भी उसमें से कुछ न लेना। क्या किसी किस्म की तोहमत लगा कर जाहिर बेजा बात करके अपना दिया हुआ माल लेते हो।"

कु०पा० ५ सूरे निसा रु० ३ आ० २०।

समीक्षा – किसी की कोई नई नवेली पसन्द आ जाने पर कोई

भी मुसलमान अपनी पुरानी बीबी से बदल सकता है। पर केवल यही शर्त है कि उसको जो कुछ दे रखा हो वह उससे न छीना जावे अय्याश लोग पहिली बीबी को ज्यादा माल देते ही नहीं हैं जो उसे बदलने पर नुकसान उठाना पड़े। बीबियाँ आपस में बदल लेने की रिवाज इस्लाम में उचित लगती है या नहीं, समझदार लोग विचार सकते हैं। क्या इसके मानी यह भी हो सकता है कि दो दोस्त आपस में भी बीबियां बदल सकते हैं? कोई मौलाना इसे खुलासा कर सकेंगे तो हमें खुशी होगी।

खुदा दिलों की बात भी नहीं जान पाता था

अरबी खुदा ने कहा "ऐ पैगम्बर! मुसलमानों को लड़ने पर उत्तेजित करो, कि यदि तुममें से जमे रहने वाले बीस भी होंगे तो दो सौ पर ज्यादा ताकतवर बैठेंगे, और अगर तुममें से सौ होंगे तो हजार काफिरों पर ज्यादा ताकतवर बैठेंगे, क्योंकि यह ऐसे लोग हैं जो समझतेही नहीं हैं।" कु० आयत ६५।

इसमें खुदा ने मुसलमानों को आशीर्वाद दिया था कि एक एक मुसलमान दस दस काफिरों पर लड़ाई में ज्यादा ताकतवर बैठेगा। मगर खुदा को शीघ्र ही मालूम हो गया कि उसे धोखा हुआ है, तो तुरन्त दूसरी आयत में खुदा ने कहा "और अब खुदा ने तुम पर से अपने हुक्म का बोझ हल्का कर दिया और उसने देखा कि तुममें कमजोरी है तो अगर तुममें से जमे रहने वाले सौ होंगे तो खुदा के हुक्म से वह दोसौ पर ज्यादा ताकतवर रहेंगे और अगर तुममें से हजार होंगे तो खुदा के हुक्म से २००० पर ज्यादा ताकतवर बैठेंगे। अल्लाह उन लोगों का साथी है जो जमे रहते हैं।"

कु० सूरते अन्फाल आ० ६६।

समीक्षा—यह दोनों आयतें यह बताती हैं कि अरबी खुदा लोगों के दिलों की कमजोरी भी नहीं समझ पाता था और गलत हुक्म दे

बैठता था जिसे बाद में उसे सुधारना पड़ता था। अरबी खुदा की अज्ञानता का पर्दाफाश करने से कुरान बनाने वाले की मुसलमानों को निन्दा करनी चाहिए।

निर्दोष औरतों पर जुल्म का खुदाई हुक्म

"ऐ मुसलमानो ! जो लोग मारे जावें उनमें तुमको जान के बदले जान का हुक्म दिया जाता है। आजाद के बदले आजाद और गुलाम के बदले गुलाम, औरत के बदले औरत। (का हुक्म दिया जाता है)"

कु०पारा २ सू० बकर रु० २२ आ० १७८।

समीक्षा—इसमें बताया है कि जैसा कोई तुम्हारे साथ व्यवहार करे वैसा ही तुम उसके साथ करो। अर्थात् कोई तुमको गाली दे या हत्या करे तो तुम भी उसको गाली दो या हत्या करो। कोई तुम्हारी औरत से हरामकारी करे या उसे कत्ल करे तो तुम भी उसकी औरत के साथ वैसा ही गुन्डापन करो। गुन्डे को सजा न देकर शरीफ आदमी को भी उसकी बेगुनाह बीबी के साथ जुल्म बलात्कार या उसकी हत्या करने का हुक्म देना अरबी खुदा न्याय मानता था। बुराई के बदले बुराई करवाना यही इस्लाम की खुसूसियत (विशेषता) रही है जिसे सारी सभ्य दुनियां बुरा मानती है।

अरबी खुदा व्यभिचार का समर्थक

"और जो औरतें कैद होकर तुम्हारे हाथ लगी हों उनके लिए तुमको खुदा का हुक्म है, और उनके अलावा दूसरी सब औरतें हलाल हैं.....। फिर जो काम में लाए तुम उन औरतों में से उनका हक जो उनसे ठहरे हों उनको दोनों के बीच में पहिले तै हुक्म हो ....।"

कु० सूरे निसा आ० २४।

समीक्षा—व्यभिचार के लिए औरतों को पकड़ लाना अरबी खुदा की निगाह में सच्चा इस्लाम है, तथा और औरतों से पहिले फीस ठहरा कर उनसे व्यभिचार करना भी जायज है। पर खुदा ने इतनी कृपा औरतों पर कर दी है कि उनको (व्यभिचार के बाद) जो दोनों में ठहरा हो वह मुसलमानों को दे देने का हुक्म दे दिया है ताकि कोई मौलाना उनकी ठहरी हुई फीस न मार लेवे।

अपनी पूजा का भूखा खुदा

खुदा ने कहा "और मैंने जिन्नों और आदमियों को इसी मतलब से पैदा किया है कि वे हमारी पूजा करें।"

५६। कु०पा० २७ सूरे जायियात रु० ३।।

समीक्षा—यह दावा सही नहीं है। यदि केवल अपनी पूजा कराना ही खुदा का उद्देश्य था तो नास्तिकों, काफिरों को खुदा क्यों पैदा करता है? जो खुदा परस्त नहीं होते हैं। क्या खुदा में इतनी भी ताकत नहीं है कि सबके दिलों को अपनी पूजा में लगा सके? ऐसा लगता है कि खुदा के बस में लोग नहीं रहते हैं, सभी आजाद तबियतें रखते हैं, खुदा का किसी पर बस नहीं रहता है। पता नहीं अपनी पूजा कराने का शौक खुदा को क्यों पैदा हो गया और वह दुनियां बनाने के व्यर्थ के बखेड़े में क्यों पड़ गया?

खुदा का एक दिन कितना बडा होगा

एक जगह कुरान में अरबी खुदा कहता है "फिर तुम लोगों की गिनती के अनुसार हजार साल की मुद्दत का एक दिन होगा। उस दिन (कयामत के दिन) तमाम इन्तजाम उसके सामने गुजरेंगे।"

५। कु०पा० २१ सू० सज्दह।

इसमें बताया गया है कि खुदा की कयामत का प्रबन्ध एक हजार

साल में पूरा होगा। खुदा का एक दिन हमारी हजार साल के बराबर होता है। फिर दूसरी जगह अरबी खुदा कितनी दूर रहता है यह बताते हुए लिखा है।

"खुदा के मुकाबिले में जो सीढ़ियों का मालिक है।३। उनसे फरिश्ते और रूहें उसकी तरफ एक दिन में चढ़ते हैं और उसका अन्दाज ५० हजार साल का है।" ४। कु०पा० २६ सू० मआरिज।

इसमें दो बातें बताई हैं कि खुदा सब जगह नहीं रहता है। वह जहां रहता है वह जगह इस जमीन से इतनी दूर है कि रूह और फरिश्तों को वहां तक दौड़ लगाने में एक दिन लग जाता हैं जो ५० हजार साल के बराबर है। अर्थात् खुदा का एक दिन हजार साल के बराबर बताने वाली पहिली आयत झूंठी है। दूसरी बात यह भी बताई है कि खदा के मकान तक चढ़कर जाने को जमीन से सीधी नसैनी लगी है और उसी पर से सीढ़ी दर सीढ़ी चढ़कर जाना पड़ता है। खुदा का मकान कहां है यह कुरान में जन्नत में बताया गया है। देखो नं० ११।

खुदा ने लौंडी से बलात्कार (जिना) जायज कर दिया

अरबी अल्लाह मियां ने फरमाया 'और तुम्हारी लौंडिया (रखेले-नौकरानियां) जो पाक रहना चाहती हैं उनको दुनियां की जिन्दगी के फायदे की गरज से हरामकारी पर मजबूर करो, और जो उनको मजबूर करेगा। तो अल्लाह उनके मजबूर किए गए पीछे क्षमा करने वाला मेहरबान है।" ३३। कु०पा० १८ सूनूरे।

इसमें खुदा ने लौंडी से राजी से या कुराजी से जिनाखोरी करने वाले को क्षमा करने का अभयदान दे दिया है। अरबी खुदा व्यभिचार को पाप नहीं मानता था यह स्पष्ट है।

कुमारी मरियम का शील भंग

खुदा ने कहा "और वह बीबी (मरियम) जिसने अपनी शर्म गाड़ की यानी शिहबत की जगह की हिफाजत की तो हमने उसमें अपनी रूह फूंक दी। और हमने उसके बेटे (ईसा) को दुनियां जहान के लोगों के लिए निशानी करार दिया।"

कु०पा० १० सू० अम्बिया आ० ९१ रु०६।

समीक्षा—खुदा ने ब्रह्मचारिणी मरियम की शिहबत की जगह में होकर फूंक मारकर रूह को गर्भाशय से दाखिल करके उसका शील-भंग किया था; यह कार्य अनुचित था। अरबी में कुरान में स्पष्ट रूप से 'फुर्जहा' (नारी का गुप्तांग) शब्द दिया है जिसमें रूह फूंकी गई थी। रूह तो नाक में होकर या आशीर्वाद देकर भी दाखिल कराई जा सकती थी, पर खुदा ने फुर्ज में से रूह फूंकना को! पसन्द किया हम समझ नहीं सके।

कल्मा बोलना कुरान के विरुद्ध

अरबी खुदा ने कहा "यह गुनाह तो अल्लाह माफ नहीं करता कि उसके साथ कोई शरीक ठहराया जाये, और इससे कम जिसको चाहे माफ करे, और जिसने अल्लाह का साझी ठहराया वह दूर भटक गया।" कु०सू० निसा रु० रु० १८ आ० ११६।

"खुदा के सिवाय किसी की पूजा मत करो, मैं उसी की ओर से तुमको डराता हूं।" कु०पा० ११ सू० हूद आ० २।।

"और मस्जिदें सब खुदा की हैं। तो खुदा के साथ किसी को न पुकारो।" पा० २९ सू० जिन्न।

समीक्षा—ऊपर के प्रमाणों में खुला हुक्म कुरान का है कि कोई भी मुसलमान यदि खुदा के नाम के साथ किसी अन्य की पूजा उपा-

सना करेगा या खुदा का शरीक ठहरावेगा। खुदा के नाम के साथ किसी अन्य को पुकारेगा तो वह काफिर पापी माना जावेगा। और उस पापी मुसलमान को खुदा हरगिज माफ नहीं करेगा। मगर आज कल के सभी मुसलमान इस हुक्म को तोड़कर कल्मे में 'ला इलाहा इल्लिल्लाह मुहम्मद रसूलिल्लाह' बोलते हैं अर्थात् नहीं है कोई खुदा खुदा सिर्फ एक है और मुहम्मद उसका रसूल है।" कुरान के अनुसार यह कल्मा गलत है। इसलिए सम्पूर्ण कुरान में यह कल्मा एक जगह कहीं भी नहीं लिखा मिलता है। यह मुसलमानों ने गलती से बाद को गढ़ लिया है। मस्जिद में कल्मा बोलना घोर पाप है।

खुदा जुबान पलट गया (बाजी हार गया)

कु०पा० २६ सूरते काफ में लिखा है कि खुदा ने कहा "मेरे यहां बात नहीं बदली जाती और में बन्दों पर जुल्म नहीं करता।"

आ० २८॥

अपने इस दावे के खिलाफ कुरान में खुदा के बात पलटने के प्रमाण अनेक हैं जैसे—(खुदा ने कहा) "क्या वह कहते हैं कि इसे (कुरान को) मुहम्मद ने बना लिया है (तू कह दे कि) यदि सच्चे हो तो एक ऐसी ही सूरत तुम भी बना लाओ और खुदा के सिवाय जिसे चाहो बुला लो।३८॥"

इसमें अरबी खुदा ने यह शर्त रखी है कि यदि कोई शख्स कुरान की जैसी एक भी सूरत नहीं बना सकता है, यदि बना सकता है तो बना कर दिखा दे। पर जब किसी ने एक सूरत ठीक कुरान की सूरत जैसी बनाकर दिखा दी तो खुदा तुरन्त अपनी शर्त पलट गया और बोला कि—

"क्या (काफिर) कहते हैं कि इसने कुरान को अपने दिल से बना लिया है, तो इनसे कहो कि अगर तुम सच्चे हो तो तुम भी इसी तरह

की बनाई हुई दस सूरतें ले आओ और खुदा के सिवाय जिसको तुमसे बुलाते बन पड़े बुला लो, अगर तुम सच्चे हो ?"

कु०पा० १२ सूरते हूद आ० १३।

इससे प्रगट है कि खुदा अपनी बात का पक्का नहीं था, अतः विश्वास योग्य नहीं था। खुदा की पहली चुनौती को स्वीकार करके हम इन्सान की बनाई बिल्कुल कुरान जैसी एक सूरत यहां छापते हैं। इससे खुदा का यह दावा झूठा हो जाता है कि कोई भी इन्सान कुरान नहीं बना सकता है और कुरान खुदाई है—

अरबी खुदा और उसके दुश्मन

अरबी अल्लाह मियां ने फरमाया कि "जो मनुष्य अल्लाह का दुश्मन है और उसके फरिश्तों का और उसके रसूलों का और जिब्रील का और मीकाएल फरिश्ते का तो अल्लाह भी ऐसे काफिरों का दुश्मन है।" कु०सू० बकर रु० १२ आ० ९८।

"यह इस बात की सजा है कि उन्होंने अल्लाह और उसके पैगम्बर का सामना किया और जो अल्लाह और उसके पैगम्बर का विरोध करेगा तो अल्लाह की मार बड़ी कठिन है।"

१३। कु०पा० ९ सू० अन्फाल रु० २।

(ऐ मुहम्मद !) फिर अगर हम तुझें (दुनियां से) उठा लें तो भी हमको इन काफिरों से बदला लेना है।"

४१। कु०पा० २५ सू० जुखरुफ रु० ४।

"जो लोग खुदा की आयतों को सुनकर इनकारी हैं, बेशक उनको सख्त सजा मिलेगी, और अल्लाह जबर्दस्त बदला लेने वाला है।" कु०सू० आल इमरान आ० ४।

समीक्षा—अरबी खुदा गैर मुसलमानों का दुश्मन था तथा उनको अपना नम्बर एक दुश्मन मानता था। उनसे बदला लेने की

घोषणा करता था। लोग कहते हैं कि खुदा सभी का पिता है, पर अरबी खुदा अपनी ही औलाद को दुश्मन मानता था। समझ में नहीं आता कि फिर वह काफिरों को पैदा ही क्यों करता था? यदि वह सब कुछ करने की ताकत रखता था तो सभी को मुसलमान बनने को उनके दिल क्यों नहीं मोड़ देता था। संसार के गैर मुस्लिम ऐसे अपने अरबी खुदा पर कैसे विश्वास कर सकते हैं?

खुदा ने धोखा खाया

लोग कहते हैं कि अरबी खुदा सब कुछ जानता है, कुरान के भी खुदा को आगे होने वाली तथा बीती हुई व लोगों के दिल की बातें जानने वाला बताया गया है। पर कुरान शरीफ में स्वयं अरबी खुदा ने स्वीकार किया है कि वह हर बात नहीं जानता है। खुदा ने कहा—

"हमने चमत्कारों का भेजना बन्द किया क्योंकि अगले लोगों ने झुठलाया। .....हम चमत्कार सिर्फ डराने की गर्ज से भेजा करते हैं।५९। .....बावजूद हम इन लोगों को डराते हैं, लेकिन हमारा डराना इनकी सरकशी को बढ़ाता है।"

६० कु०पा० १५ सू० बनी इसराइल रु० ६।

समीक्षा—लोग खुदा से ज्यादा अक्लमन्द थे जो उसके बहकाने या डराने में नही आते थे जब कि अरबी अल्लाह मियां यह समझते रहते थे कि झूंठे चमत्कार भेजकर या दिखाकर वे लोगों को डरा कर धोखे में फँसा सकेंगे। आखिर खुदा को अपनी हार इन्सान (काफिरों) से माननी ही पड़ी और कहना पड़ा कि उसने धोखा खाया और अपनी गलती स्वीकार की। फर्जी चमत्कारों की पोल कभी न कभी खुल ही जाती है।

कुर्बानी का कुरान में आदेश नहीं है

भारत में हिन्दू मुस्लिम झगड़े की जड़ गाय, भैंस, बकरी आदि की कुर्बानी अनेक जगह होती है। स्वयं मुसलमान भी नहीं जानते हैं कि कुर्बानी करने का आदेश कुरान में न होने से कुफ्र है। कुरान में सूरते हज्ज में लिखा है कि "जब हजरत इब्राहीम ने कावा बनाकर पूरा कर लिया तो खुदा ने हुक्म दिया कि ऐ इब्राहीम ! तुम आवाज दो कि लोग हज्ज को आवें वे कमजोर ऊँट पर सवार होकर आवें, कावे की परिक्रमा करें, फिर ऊँटों की छाती में भाला मारें। जब सब खून निकल जाने पर ऊँट एक तरफ गिर पड़े तो उसे काटें खावें।" आगे साफ लिखा है कि—

"खुदा तक न तो इनके गोश्त पहुंचते हैं और न इनके खून।"

३७। कु०पा० १७ सू० हूद।

इस प्रकार कुरान में कोई भी पशु या ऊँट की कुर्बानी का केवल कावा में करने का विधान है। भारत में गाय आदि किसी भी पशु की कुर्बानीका आदेश नहीं है, यह बात मुसलमानों को बतानी चाहिए। उनके जिद्द करने पर अदालत की मदद लेकर कुर्बानी रुकवा देनी चाहिए। वैसे तो हर जानवर को यहाँ तक कि (पाखाना खान वाले) सूअर को भी भूख की मजबूरी के नाम पर खाने का विधान कुरान में है और काटते समय सभी पर खुदा का नाम ईसाई लेते ही हैं, पर कुर्बानी के लिए ऊँट ही हैं या जो भी पशु होगा उसे वह भी कावे में परिक्रमा के बाद मक्का में ही काटे जा सकेंगे। भारत या दुनियां में और कहीं नहीं।

मौजूदा कुरान असली नहीं है

खुदा ने असली कुरान की कसौटी कुरान में यह लिखी है—

कु०पा० २३ सूरते स्वाद रुकू [illegible] में लिखा है "और

गुरु विरजानन्द स्मृति पुस्तकालय
पु परिग्रहण क्रमांक
दयानन्द महिला मह

अगर कोई कुरान ऐसा होता जिससे पहाड़ चलने लगते या उससे जमीन के टुकड़े हो सकते या उससे मुर्दे जी उठें और बोलने लगे तो वह यही होता ..... ।३१। (अहमद बशीर का कुरान तर्जुमा)

समीक्षा—अगर मौजूदा कुरान के पहाड़ पर रखने से वह चलने फिरने लगे तो यह सच्चा कुरान होगा। (ii) अगर इसके जमीन पर रखने से वह फट जावे तो यह सच्चा कुरान होगा। (iii) अगर इस कुरान को सुनाने या मुर्दे की छाती पर कस कर बांध देने से वह मुर्दा जिन्दा होकर बोलने लगे तभी यह सच्चा कुरान माना जावेगा।

पर इससे एक भी शर्त पूरी नहीं होती है अतः मौजूदा कुरान असली नहीं है। इस पर विश्वास करना गलती है। यदि यह असली होता तो एक भी मुसलमान दुनियां में नहीं मरना चाहिए था।

खुदा रक्षा को फौजें रखता है

"फिर अल्लाह ने अपने पैगम्बर और मुसलमानों पर अपना सब्र उतारा और ऐसी फौजें भेजीं जो तुमको दिखाई नहीं पड़ती थीं और काफिरों को बड़ी सख्त मार दी और काफिरों की यही सजा है।"

कु० पा० १० सू० तौबा रु० ४ आ० २६।

समीक्षा—खुदाबन्द अपनी हिफाजत के लिए फरिश्तों की फौजें भी रखते हैं काफिरों को (अपने दुश्मनों को) जब खुदा नहीं हरा पाते हैं तो फौजी डिवीजन भेजकर उनसे अपनी व अपने चेलों की जीत कराते हैं, इससे अरबी खुदा की ताकत का सभी अन्दाज लगा सकते हैं। इञ्जील में खुदा की घुड़सवार फौजों की संख्या २० करोड़ प्रकाशित वाक्य नाम के अध्याय में लिखी है। स्पष्ट है कि कुरान ने जो अरबी मुस्लिम खुदा को सर्व शक्तिमान (कादिरे मुतलक) लिखा है वह बिलकुल गलत है। वह जीत के लिए फरिश्तों की फौजों की मदद का मुहताज है।

अल्लाह मियाँ का दफ्तर

"हर गिरोह अपने (कर्म) लेखा के पास बुलाया जाएगा और जैसा काम तुम करते थे आज उसका बदला पाओ।२८। यह हमारा दफ्तर है जो तुम्हारे काम ठीक बतलाता है। जो कुछ तुम करते थे हम उसको लिखवाते जाते थे।

२९। कु पा० २५ सू जासियह रु० ४।

समीक्षा—अरबी मुस्लिम अल्लाह मियां के यहाँ भी तहसीलदारों की तरह दफ्तर है जिनमें कागजात रखे जाते हैं, यह बात खुद ही खुदा ने कही है। हमको सूचना मिली है कि मिस्टर शैतान बहादुर ने उस दफ्तर में आग लगाकर सारा रिकार्ड जलाकर भस्म कर दिया है। अतः किसी का भी कर्म लेखा अब मजबूरी में वहां नही है। कयामत का फैसला अब नहीं हो सकेगा और सभी खुदा जन्नती हूरों के मजे लूटने को बहिश्त में भेजेगा। लोग दोजख का डर निकाल दें और खुलकर मजे की जिन्दगी बितावें। दफ्तर जल जाने से खुदा जी की भी कयामत के दिन फैसला करने की भारी परेशानी दूर हो गई है।

कुरान में ओ३म्

कुरान में सूरते बकर की पहिली ही आयत में लिखा है

"शुरू अल्लाह के नाम के साथ जो निहायत दयावान मिहरबान है। अलिफलाम-मीम।"

इस आयत का अर्थ करते हुए कोई भी मुस्लिम तर्जुमाकार अलिफ लाम मीम का अर्थ नहीं करता है। इसमें अलिफ से अ का उच्चारण बनेगा। लाम अक्षर अरबी व्याकरण से वाउ अक्षर में बदल जाता है जैसे उल्दीन लिखने पर उद्दीन पढ़ा जाता है। इस तरह अ के साथ

वाउ मिलने पर 'ओ' बनेगा और अन्त में मीम से 'म' मिलाने पर 'ओम' बनेगा जो ईश्वर का वैदिक नाम है। तब आयत का सीधा अर्थ होगा "मैं कुरान लिखना शुरू करता हूं ओम नाम वाले निहायत दयावान मेहरबान अल्लाह के नाम के साथ।" ह० मोहम्मद साहब ने जब कुरान लिखना शुरू किया था तो सर्व प्रथम ओम् नाम से दयालु परमेश्वर का स्मरण किया था। इससे कुरान पर वैदिक ईश्वरीय नाम ओम् की छाप स्पष्ट है। मुस्लिम विद्वानों को यह बात मानने में शर्माना नहीं चाहिए।

खुदा को रोजों में विषय भोग जायज करना पड़ा

(मुसलमानो) "रोजों की रातों में अपनी बीबियों के पास तुम्हारा जाना जायज कर दिया गया है। वह तुम्हारी पोशाक है और तुम उनकी पोशाक हो। अल्लाह ने देखा तुम (चोरी-चोरी) उनके पास जाने से अपना (दीन) नुकसान करते थे, तो उसने तुम्हारा अपराध क्षमा कर दिया और तुम्हारे अपराध से दर गुजर की। बस अब रोजों में (रात के वक्त) उनके पास हम बिस्तर हो और जो नतीजा खुदा ने तुम्हारे लिए लिख रखा है उसकी इच्छा करो और खाओ पीओ ..... ।" कु पा० २ सू० बकर रु० २३ आ० १८७।

नोट— कु पा० २ सू बकर रु० २३ आ० १८७ में रोजों में संभोग करना खुदा ने मना किया।

समीक्षा—अरबी खुदा को जानकारी कम थी, यदि वह पहिले यह जानता होता कि उसके मना करने पर भी मियां लोग रोजों में बिना गड़बड़ किए न मानेंगे तो वह रोजों में सम्भोग न करने का कानून न बनाता। उसे यह बाद को तजुर्बा हुआ कि उसने पहिले भूल की थी और बाद को लोगों को विषय भोग करने की इजाजत देनी

पड़ी। अरबी खुदा मुसलमानों की विषय भोग की ख्वाहिशों का भी ध्यान रखता था, मुसलमान शायद इसीलिए पांच बार रोज नमाज पढ़के शुक्रिया अदा किया करते हैं। ठीक भी है अहसान खुदा का न भूलना चाहिए। हमारे ख्याल से कुरान के इस दावे की कि अरबी खुदा सब कुछ जानता है, इस आयत ने धज्जियां उड़ा दी हैं।

खुदा ने जमीन नहीं बनाई

कुरान में लिखा है कि " पहाड़ जमीन पर गाढ़ें ताकि तुम्हें लेकर किसी और तरफ झुकने न पावें।"

पा०१४ सू० नहल आ० १४।

'जमीन में पहाड़ों को गाढ़ दिया'

पा० ३० सू० नाजियात आ० ३२।

समीक्षा—खुदा ने यदि जमीन को बनाया होता तो उसे पता होता कि पहाड़ जमीन के अन्दर से ऊपर को उभर कर ऊँचे उठते। वे ऊपर से गाड़े नहीं जाते हैं जैसे खूँटा जमीन में ऊपर से ठोका जाता है। खुदा साहब ने यदि जमीन बनाई होती तो इतनी सी मामूली बात उसे अवश्य मालुम होती।

खुदा की दोजख, जमीन व आसमान से बातचीत

(खुदा ने कहा कयामत के दिन हम) "दोजख से पूँछेंगे कि तू भर चुका ? वह कहेगा क्या कुछ और भी है ?"

कु० पारा २६ सूरे काफ आ० २९।

(खुदा ने) जमीन और आसमान दोनों से कहा कि तुम दोनों खुशी से आए या लाचारी से ? दोनों ने कहा हम खुशी से आए।

११। कु०पा० २४ सू० हामीम सज्दह।

समीक्षा—खुदा का बेजान जमीन आसमान तथा दोजख से

सवाल करना और उनका जबाव देना यह बताता है कि खुदा सब कुछ नहीं जानता था। हर बात पूछ कर ही जान पाता था। यह आयतें अरबी खुदा पर अज्ञानी होने का दोष लगाती हैं। और यदि यह सही मानी जावें तो मूर्ति पूजकों का अपनी आराध्य, मूर्तियों से बातें करना भी सही क्यों न माना जावेगा? दूसरी बात यह है कि खुदा ने जमीन और आसमान से पूछा कि तुम खुशी से आए या लाचारी से और उनका उत्तर कि हम दोनों खुशी से आए, यह बताता है कि दुनियां बनने से पहिले ये दोनों कहीं तैयार रखे थे और खुदा के बुलाने पर चले आए थे। खुदा ने इनको नहीं बनाया था। यदि बनाया होता तो यह सवाल ही नहीं पूंछता। तब कुरान में अनेक जगहों पर खुदा का इनको बनाने का दावा करना सर्वथा गलत हो जाता है। ऐसी परस्पर विरोधी बेतुकी बातें करने वाला भी खुदा और ऐसी किताबें खुदाई कैसे मानी जा सकती हैं?

अरबी खुदा की बे इन्साफी

खुदा ने कहा "हमको जब किसी गांव को मार डालना मंजूर होता है तो हम उसके खुश हाल लोगों को हुक्म देते हैं। फिर जब वे उसमें बे हुक्मी करते हैं तब उन पर यह सजा साबित हो जाती है। फिर हम उस बस्ती को मार कर तबाह कर देते हैं"

कु०पा० १६ बनी इसराएल आ० १६

समीक्षा—खुशहाल लोगों को मारने के लिए भी अल्लाह मियां साहब को ओछे हथकन्डे अपनाने पड़ते हैं। क्या ऐसा खुदा इन्साफ पसन्द और दयालु माना जा सकता है। जो न मानने योग्य ऊँट-पटाँग आदेश देकर और उन्हें न मानने पर भले आदमियों की हत्या किया करता था? ऐसे अरबी खुदा से तो भारत के मुंसिफ लोग लाख गुने अच्छे हैं।

लूट के माल में खुदा का हिस्सा

"अल्लाह ने तुमको बहुत सी लूटों को देने का वायदा किया था, कि तुम उसे लोगे फिर यह (खैबर की लूट) तुमको जल्द दी···।२०। और दूसरा वायदा लूट का है जो तुम्हारे काबू में नहीं आया वह खुदा के हाथ में है।" २१। कु०पा० २६ सू० फतह।

'ऐ पैगम्बर ! तुमसे लूट के माल का हुक्म पूछते हैं, कह दो कि लूट का माल तो अल्लाह और पैगम्बर का है।" १।

"और जान रखो कि जो चीज तुम लूट कर लाओ उसका पांचवां भाग खुदा का और पैगम्बर का और फरिश्तों का अनाथों का और गरीबों का और मुसाफिरों का है।"

कु० सू० अनफाल आ० ४१।

समीक्षा—अरबी अल्लाह मियां मुसलमानों से गरीब की औरतें पैसा व वस्त्रों की लूट कराता है और उसमें अपना भी हिस्सा रखता है। लगता है अरबी खुदा बहुत ही जालिम तथा गरीब था जो लूटें कराकर अपनी गुजर करता था। पैगम्बर और उसके फरिश्तों को घर बैठे बिना महनत के लूट में हिस्सा दिलाता था। एक बात नहीं समझे कि लूट में जो औरत पकड़ कर लाई जाती होंगी उनका खुदा क्या करता था और कैसे इस्तेमाल करता था ? जो इन्सान या खुदा लूट करावे उसे कौन मूर्ख या भला आदमी शरीफ मानेगा ?

झूंठी कसमें खाने का खुदाई परमिट

(खुदा ने कहा ऐ मुसलमानो) "तुम लोगों के लिए खुदा ने तुम्हारी कस्मों को तोड़ डालने का हुक्म दे रखा है और अल्लाह ही तुम्हारा मददगार और हिकमत वाला है."

२। कु०पा० २८ सू० तहरीम।

समीक्षा—जब खुदा ही मुसलमानों को कस्मों को तोड़ डालने का हुक्म दे रहा है तो कोई भी भला आदमी किसी मुसलमान की कसम (वायदे) पर कैसे विश्वास कर सकता है। जो करेगा वह धोखा ही खावेगा क्योंकि मुसलमानों का अमल कुरान के अनुसार रहता है। आश्चर्य है कि अरबी खुदा मियाँ भी अपने चेलों को झूँठा धोखेबाज बनाता है बजाय इसके कि वह लोगों को ईमानदार बनना, कस्मों वायदों पर कायम रखना सिखाता।

खुदा के ज्ञान का नमूना

"आसमान की कसम जिसमें बुर्ज है।"

कु०पा० ३० सू० बुरुज आ०।

"जब आसमान फट जावेगा और परवर्दिगार की बात सुनेगा यह उसका फर्ज ही है।" सू० इन्शिकाक।

"जब जमीन तान दी जावेगी, और जो कुछ उसमें है बाहर डाल देगी और खाली हो जावेगी, और खुदा की बात सुनेगी, यह तो उसका फर्ज ही है।" कु० सू० इन्शिकाक आ०।

"जब सितारे झड़ पड़े" कु० सू० इन्फितार आ०।

"पहाड़ों को जमीन में गाढ़ दिया" कु० सू० नाजियात आ०।

'जब सूरज लपेट लिया जावे' 'जब आसमान की खाल खींची जाय' सू० तकवीर।

'जब सूरज चन्द्रमा जमा किए जायेंगे' सू० कयामत आ० ९।

'खुदा ने आसमान टटोला तो उसे सख्त चौकीदारों से भरा पाया।' सू० जिन्न आ० ८।

'खुदा ने तर ऊपर सात आसमान बनाए' सू० नूह आ० १५।

'जमीन और पहाड़ उठाए जायेंगे और एकदम तोड़ दिए जायेंगे।'

सू० हक्का आ० १४।

'छः दिन में जमीन और आसमान बनाकर तख्त पर जा बैठा।'

सू० हदीद आ० ४।

"हमने आसमानों को अपने हाथों के बल से बनाया···।"

सू० जारियात आ० ४७।

"आसमान बिना खम्बे के खड़े किए" सू० लुकमान आ० १०।

"आसमानों में ओलों के पहाड़ जमे हुए हैं।"

सू० नूर आ० ४३।

"आसमान जमीन पर गिरने से रुका है।" सू० हज्ज आ० ६५।

"आसमान जमीन पिंड सा था हमने (उसको) तोड़कर जमीन और आसमान को अलग-अलग कर दिया।"

कु० सू० अम्बिया आ० ३०।

'और ऐ पैगम्बर तुमसे पहाड़ों की बावत पूछते हैं, तो कहो कि मेरा परवर्दिगार इनको उड़ा देगा।१०५। और जमीन को चौरस कर छोड़ देगा।" १०६। कु०पा० १६ सू० ताहा।

"पहाड़ चलने लगेंगे।" कु०पा० ७ सू० नूर आ० १०।

'जब पहाड़ चलाए जायेंगे' जब तारे झड़ पड़े।"

कु०पा० ३० सू० तकवीर आ० २।३।

"कयामत के दिन पहाड़ बादल की तरह उड़ते फिरेंगे।"

फ० २० सू० नम्ल।

"उसी ने मनुष्य को पपड़ी की तरह बजती हुई मिट्टी से पैदा किया।" १४। कु० सू० रहमान।

"और सूरज के निकलने और डूबने की जगहों का मालिक।"

१७। सू० रहमान।

'इन आदम के बेटों को हमने लसदार मिट्टी से पैदा किया है।"

११। कु० सू० साफ्फात पा० २३।

"आसमान की कसम जिसमें बुर्ज है।"

पा० ३० सू० बुरुज आ० १।

"पहाड़ धुनी ऊन के मानिन्द हो जायेंगे।"

५। सू० कारियह पा० ३०।

"जिस दिन हम आसमान को इस तरह लपेटेंगे जैसे तूमार में कागज लपेटते हैं।" कु० सू० अम्बिया रु० ४ आ० १०४।

"अल्लाह वह है जिसने आसमानों को बिना किसी सहारे के ऊँचा खड़ा किया, फिर तख्त पर जा बैठा।"

कु०पा० १३ सू० राद आ० २।

'आसमान में दरवाजे भी हैं।" पा० १४ सू० हिज्र आ० १४।

"कुकर्मी लोगों के कर्म रोजनामचा और कैदियों के रजिस्टर में है ७। अच्छे लोगों के कर्मलेखा बड़े रुतवे वाले लोगों के रजिस्टर में हैं।१८। वह एक किताब है जिसकी खानापूरी होती रहती है।२०। फरिश्ते जो नजदीक हैं उस पर तैनात है।"

२१। कु०पा० ३० सू० ततफीफ।

समीक्षा—कुरान में से सैकड़ों बातों में से चन्द ऊपर दी ईग हैं उन्हीं को पढ़कर पाठक कुरान लेखक की शैक्षणिक योग्यता का अनुमान लगा सकते हैं। हम समझते हैं कि यह कुरान यदि खुदाई होता तो उसमें ऐसी बातें न लिखी गई होतीं जैसी ऊपर दी गई हैं। खुदा के यहां भी दफ्तर है। लोगों के कर्मलेखा उन दफ्तरों में रखे जाते हैं। फरिश्ते (नौकर) उनकी रक्षा को तैनात रहते हैं। आसमान में बुर्ज है, बर्फ के पहाड़ जमा हैं, आसमान में पहाड़ बनाकर फिर जमीन में ठोंक कर गाढ़े गए हैं। पहाड़ हवा में उड़ते फिरते तो आदमी, मकान, मस्जिद भी क्यों न उड़ेंगे। यदि कोई पहाड़ चलकर काबा में गिरता तो क्या होगा? पहाड़ चलना भी जानते हैं। इन्सान सूखी मिट्टी से खुदा ने बनाया था। मजेदार कल्पना है। मुस्लिम डाक्टरों को खोज करके पी. एच. डी. लेनी चाहिए। आसमान और जमीन भी खुदा से खुलकर बातचीत करेंगे तो बुत परस्तों की मूर्तियों का

भी उनसे बातें करना क्यों न सच मान लिया जावे ? शून्य आसमान का जमीन के साथ पिण्ड भी क्या बन सकता है ? जब जमीन व आसमान पहिले ही से मौजूद थे तो खुदा ने उनको बनाने का गलत दावा क्यों किया है ? उन्हें तो किसी और ने ही बनाया होगा। सूरज निकलने और डूबने की जगह कहां हैं, कोई बता सकता है ? सूरज और चांद किसी मौलवी के मकान में जमा किए जावेंगे या काबे की किसी मस्जिद में रखे जावेंगे ? है कोई सच्चा मुसलमान जो इनके जमा होने की कल्पना का स्थान बता सके ? कागज की तरह आसमान लपेटा जावेगा। ऐसी बातें जिस किताब कुरान में हैं उसे पढ़कर अक्ल रखने वाला मुस्लिम नौजवान यदि इस्लाम को त्यागता है तो दोष कुरान का है, किसी और का नहीं है।

गुन्डे पैदा करने का खुदा का उद्देश्य

"और इसी तरह हमने हर बस्ती में बड़े २ अपराधी पैदा किए ताकि वहां फिसाद पैदा करते रहें।"

कु॰पा॰ ८ सू॰ अनआम रु॰ १५ आ॰ १२३।

खुदा अगर सभी भले आदमी पैदा करता तो संसार सुखी रहता पर उसने जान बूझकर लूटमार गुण्डा गर्दी कत्ल व्यभिचार फैलाने के लिए बड़े २ बदमाश गुन्डे पैदा किए हैं ताकि वे गुण्डा गर्दी करके संसार में सुख शान्ति को भंग करते रहें। यदि गुण्डे वैसा न करेंगे तो खुदा उनको मार लगावेगा। कुरान ने 'ताकि' शब्द से स्पष्ट किया है कि गुन्डे गुन्डा गर्दी पैदा करने के लिए ही खुदा ने पैदा किए हैं। अब कोई बतावे कि गुण्डा गर्दी की जिम्मेवारी खुदा की है या गुन्डों की। जनाब यह अरबी खुदा है। इससे भी मजेदार बात यह है कि खुदा मियां एक जगह यह भी शेखी मारते हैं कि मैं फसाद नहीं पसन्द करता हूं। कुरान में लिखा है 'अल्लाह फसाद नहीं चाहता।' सू॰

बकर २०५। यह तो ऐसी ही बात हुई कि कोई थानेदार रात को चोरों से कहकर चोरी कराया करे और दिन में लोगों से कहता फिरे कि मैं चोरी पसन्द नहीं करता हूं। कुरान का अरबी खुदा भी ठीक ऐसा ही था।

इन्सान का दुश्मन अरबी खुदा

कुरान पा० १४ सू० नहल आ० १०८ "यही वह लोग हैं जिनके दिलों पर और जिनके कानों पर और जिनकी आंखों पर अल्लाह ने मुहर कर दी है और यही गाफिल हैं।"

"खुदा जिसे चाहता है सीधी राह दिखाता है।"

कु० सू० बकर आ० १४२।

"खुदा काफिरों को नसीहत नहीं दिया करता।"

कु० सू० बकर आ० २६४।

"इनमें ऐसे भी हैं जो तुम्हारी तरफ कान लगाते है, और उनके दिलों पर हमने परदे डाल दिए। इन कानों में बोझ है ताकि तुम्हारी बात न समझ सकें ..." सू० अनआम आ० २५।

"जो लोग हमारी आयतों को झुठलाते हैं, अंधेरे में गूंगे बहरे हैं, खुदा जिसे चाहे भटका दे और जिसे चाहे सीधे रास्ते पर लगा दे।"

सू० अनआम आ० ३९।

"अगर खुदा चहता तो वे शरीक न ठहराते, और हमने तुमको इन पर निगहबान नहीं किया और न तुम इन पर वकील हो।"

कु० सू० अनआम आ० १०७।

"उसी ने एक गिरोह को हिदायत दी और गिरोह को भटका दिया।" सू० आराफ आ० ३०।

"हम ही ने इनके दिलों पर परदे डाल दिए हैं ताकि सच बात न समझ सकें।" सू० कहफ आ० ५७।

"हम चाहते तो हर आदमी को उसको राह की सूझ देते, मगर हमारी बात पूरी होती है कि जिन्न और आदमी सबसे हम दोजख को भर देंगे।" सू० सज्दह आ० १४।

"फिर अगर हम तुझे (ऐ मुहम्मद) उठा लें तो भी हमको इन काफिरों से बदला लेना है।" कु० सू० जुखरुफ आ० ४१।

"जो शख्स खुदा की याद से बराता है हम उस पर एक शैतान मुकर्रर कर दिया करते हैं।३६। और शैतान पापियों को राह से रोकता है।" सू० जुखरुफ आ० ४।

समीक्षा—कुरान अरबी खुदा को बहुत ही बेइन्साफ तथा इन्सान का दुश्मन बताता है। जब खुदा अपने को दुनियां का पैदा करने वाला बताता है तो उसने सारे इन्सानों को एक जैसा भला क्यो नहीं पैदा किया है। क्यों गरीब ,अमीर, अन्धे, लूले-लंगड़े, बहरे-गूंगे, पैदा किए हैं? सभी को मुसलमान क्यों नहीं बनाया है। और जब वे लोग कुरान सुनना चाहते हैं तो उनके दिल दिमाग पर पर्दा क्यों डाल देता है ताकि लोग उसे न समझ सकें। और जब खुदा के ही हुक्म से वे मुशरिक या काफिर बने रहते हैं तो उन पर शैतानों को लगाकर उन्हें गुमराह क्यों करता रहता है। फिर जब खुदकी मर्जी से ही लोग काफिर रहते हैं तो फिर उन पर अपना गुस्सा क्यों उतारता है और उन्हें दोजख में झोंकने की धोंस क्यों देता है। खुदा ने कभी यह कसम क्यों खाई थी कि हम काफिरों और जिन्नों से दोजख को भर देंगे। फिर जब दोजख भरने के लिए ही उसने इन्सान को बनाया है और उसी के हुक्म से शैतान लोगों से बुरे काम कराता है तो फिर लोगों का दोष ही क्या रहता है? जो अरबी खुदा भूले भटकों को रास्ता नही बताता जिनको कि नसीहत की जरूरत होती हैं और उन सीधे रास्ते वालों को नसीहत देता है जिन्हें जरूरत नसी-

हत की नहीं होती है ऐसे ना समझ तथा इन्सान के दुश्मन को कौन अपना पिता मार्ग दर्शक या रक्षक मानेगा ? क्या ऐसा जालिम भी खुदा हो सकता है जो लोगों को बुरे रास्ते पर खुद ही डाले और फिर उन्हीं को दोजख में झोंकने की गाली भी देवे।

खुदा एक गलत परीक्षक

एक बार खुदा मियां ने आदम और अन्य फरिश्तों को परीक्षा का दिन नियत किया खुदा ने कहा है "और आदम को सब चीजों के नाम (पहिले ही से) बता दिए। फिर इन चीजों को फरिश्तों के सामने पेश करके कहा कि अगर तुम सच्चे हो तो हमको इन चीजों के नाम बताओ।३१। वे बोले तू पाक है जो तूने हमको बता दिया है, उसके सिवाय हमको कुछ मालूम नहीं....।३२। (तब खुदा ने हुक्म दिए कि ऐ आदम ! तुम फरिश्तों को इनके नाम बता दो।"

३३। कु० सू० बकर।

समीक्षा—परीक्षक को सदैव ईमानदार होना चाहिए। पर अरबी खुदा ईमानदार परीक्षक नहीं था। उसने पूछे जाने वाले सवालों के जबाव आदम को रटा दिए और फरिश्तों को नहीं बताए। आदम को परीक्षा में पास करके फरिश्तों को फेल कर दिया। क्या ऐसे बेइन्साफ अरबी खुदा से भी कोई इन्साफ की आशा कर सकता है।

कयामत का वक्त खुदा भी नहीं जानता था

(खुदा ने कहा) "कयामत आने वाली है, मैं उसके (समय) को छिपाता हूं ताकि हर आदमी डर से नेक काम करने की कोशिश करे।" कु०पा० १६ सू० ताहा आ० १५।

"लोगों के हिसाब का वक्त (कयामत) करीब आ लगा इस पर भी भूल में बे खबर हैं।" कु०पा० १७ सू० अम्बिया आ० १।

"और कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो यह (कयामत का) वायदा कब होगा ।७१। क्या आश्चर्य जिसकी तुम जल्दी मचा रहे हो, वह तुम्हारे पास आ लगी हो ।" ७२ कु०पा० सू० नम्ल ।

"और (लोग) कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो यह फैसला कब होगा ? २८। (ऐ पैगम्बर) जवाब दो कि जो लोग (दुनियां में) इन्कार करते रहे हैं फैसले के दिन उनका ईमान लाना उनके कुछ भी काम न आवेगा और न उनको मुहलत मिलेगी ।"

२९। कु०पा० २१ सू० सज्दह ।

"और (पूँछते हैं) अगर तुम सच्चे हो तो यह कयामत का वायदा कब पूरा होगा ।२९। कहो कि तुम्हारे साथ जिस दिन का वायदा है तुम न उससे एक घड़ी पीछे रह सकोगे और न आगे बढ़ सकोगे ।३०। कु०पा० २२ सू० सबा ।

"कयामत की घड़ी पास आ लगी और चांद फट गया ।"

१।। कु०पा० २७ सू० कमर।

"तुमसे कयामत के बारे में पूँछते हैं कि उसका वक्त कब है ।४२। तुम उसका वक्त बताने की चर्चा में कहां पड़े हो ।४३। (आखिरी) चाह तो तेरे परवर्दिगार को ही है ।४४। तू तो बस उसको डरा सकता है जो उससे डरे ।४५। कु०पा० ३० सू० नाजियात ।

समीक्षा—कयामत का भय मुहम्मद साहब ने लोगों को इस्लाम में लाने के लिए दिखाया था जब भी लोग उसका वक्त पूँछते थे तो उन्होंने उनको उल्टे-सीधे जबाव दिए थे। न तो ठीक समय का ज्ञान मुहम्मद साहब को था और न उनके अरबी मुस्लिम खुदा को था जो वह लोगों को सन्तोष जनक जबाव दे सकता । अन्त में उन्हें यह कहना ही पड़ा कि उसका वक्त तो खुदा ही जानता है । यदि कुरान खुदाई होता तो खुदा कयामत का वक्त जरूर बता देता। जैसा कि वेद ने

परमात्मा ने चार अरब बत्तीस करोड़ साल सृष्टि की आयु बतला दी हैं। इससे भी प्रगट है कि कुरान खुदाई किताब नहीं है।

बीबियाँ खेतियां हैं

"तुम्हारी बीबियां तुम्हारी खेतियां हैं। अपने खेत में जिस तरह चाहो जाओ, और अपने लिए आनन्द का भी बन्दोवस्त रखो। और अल्लाह से डरो और जाने रहो कि उसके सामने हाजिर होना है। ईमान वालों को खुश खबरी सुना दो।" सू॰ वकर आ० २२३।

समीक्षा—जिस प्रकार किसान अपने खेत में पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण चाहे जिस दिशा से घुस जाता है कुरान ने बीबियों को खेती बताकर उनसे चाहे जिधर से सम्भोग करने की स्वीकृति दे दी है तथा इस अप्राकृतिक व्यभिचार (मैथून) की आज्ञा को खुश खबरी बताकर लोगों को सुनाने का आदेश दिया है।

शाह अब्दुल कादिर ने अपने कुरान भाष्य में इस आयत पर हाशिया पर हदीस दी है जिससे स्पष्ट है कि एक साहब के अपनी बीबी से गुदा मैथुन कर लेने पर उसे जायज बनाने के लिए यह आयत उतारी या बना दी गई है ताकि गुदा मैथुन नाजायज न रहे। इस्लाम में यह कुप्रथा (इगलाम बाजी) अरब में चालू थी। इस आयत द्वारा उसे जायज बना दिया गया। कुरानी जन्नत में शायद गिलमे (लौंडे) भी इसीलिए मुसलमानों को दिए जावेंगे।

खुदा घेरा भी जा सकता है (छोटा सा है)

कुरान में लिखा है "और उस दिन तू देखेगा कि फरिश्ते अपने परवदिगार की खूबी बयान करते तख्त को आस पास घेरे हैं।"

कु॰पा० २४ सू० जुमर आ० ७५।

खुदा लामहदूद (अनन्त) नहीं रहा क्योंकि वह सीमित लम्बाई

चौड़ाई वाले तख्त पर बैठता है तथा फरिश्तों द्वारा उसे घेरा जा सकता है। जिसकी हद न हो उसे घेरा नहीं जा सकता है। इससे यह भी स्पष्ट हो गया कि आकाश और तख्त भी खुदा से बड़े हैं। यदि तख्त खुदा से छोटा होगा तो खुदा उस पर बैठ नहीं सकेगा। यदि खुदा ने तख्त बनाया था तो बनाने से पहिले खुद किस पर बैठता था। यदि तख्त खुदा के साथ हमेशा से है तो उम्र के हिसाब से तख्त खुदा के बराबर हो गया। यदि तख्त खुदा से भी पहिले से था तो खुदा से उम्र में बड़ा हो गया। यदि खुदा के भारी बोझ से थक कर फरिश्ते तख्त को पटक देवें तो खुदा कहां गिरेगा। यदि फरिश्ते आकाश में निराधार तख्त को लेकर खड़े हो सकते हैं तो तख्त भी खुदा की ताकत से बिना फरिश्तों के सहारे के क्यों नहीं रुका रह सकता है इत्यादि अनेक प्रश्न हैं जिनका कोई जवाब दिया ही नहीं जा सकता है।

ह० मौहम्मद की बीबियों की नामावली

इस्लामिक पुस्तकों में ह० मुहम्मद साहब को प्राय: लोग ब्रह्मचारी लिखते हैं। वह कितने संयमी थे इसका अनुमान आप उनकी पत्नियों की संख्या से लगा सकेंगे। उनके १२ निकाही पत्नियां निम्न प्रकार थीं—

(१) खदीजा पुत्री खल्वीद (२) सूदा पुत्री जमअ
(३) आयशा पुत्री अबूबकर (४) हफ्जा पुत्री खलीफा उमर
(५) जनीब पुत्री इबजीरा (६) उम्म सलमा (ह० की चचेरी बहिन)
(७) जैनब (ह० के मुतबन्ना बेटे की बीबी)
(८) जौरिया पुत्री उलहारिस
(९) उम्म हबीबा पत्नी अब्दुल्ला बिन अहश
(१०) सफिया पुत्री अखसब यहूदी (११) मैमुना पुत्री उलहरास
(१२) रहोना पुत्री जदीद।

इन निकाही एक दर्जन बीबियों के अलावा बिना निकाही लौंडियां उनके पास कितनी रहती थीं उनकी ठीक सूची हमको नहीं मिल सकी है, किन्तु वे भी अनेक थीं। कुरान पा० १८ सू० मोमिनून आ० ६ से स्पष्ट है कि अपनी बीवियों और बांदियों से वे रोक टोक विषय भोग करने में कुरान को ऐतराज नहीं है। कुरान में चार शादियों को भी विवाहों की अन्तिम सीमा नहीं माना है, जितनी चाहो शादियाँ कर सकते हो और जितनी चाहे बांदियां (रखेलें) रख सकते हो। हजरत का जीवन भी कुरान के अनुसार ही था और वैसा ही उनका ब्रह्मचर्य था।

पैगम्बर लूत का पुत्री गमन

कुरान की मान्य खुदाई किताब तौरात में लूत के अपनी बेटियों से व्यभिचार की कथा दी है जिसकी निन्दा किसी भी खुदाई किताब में नहीं की गई है। कथा निम्न प्रकार है—

"(३०) और लूत ने सोअर को छोड़ दिया और पहाड़ पर अपनी दोनों बेटियों समेत रहने लगा। क्योंकि सोअर में रहने से डरता था। इसलिए वह और उसकी दोनों बेटियां वहां एक गुफा में रहने लगे।३१। तब बड़ी बेटी ने छोटी से कहा हमारा पिता बूढ़ा है, और पृथ्वी भर में कोई ऐसा पुरुष नहीं है जो संसार की रीति के अनुसार हमारे पास आए ३२। सो अब हम अपने पिता को दाख-मधु (शराब) पिलाकर उसके साथ सोयें, जिससे कि हम अपने पिता के वंश को बचाए रखें।३३। सो उन्होंने उसी दिन रात के समय अपने पिता को दाख-मधु पिलाया, तब बड़ी बेटी जाकर अपने पिता के पास लेट गई, पर उसने न जाना कि वह कब लेटी और कब उठ गई।३४। और ऐसा हुआ कि दूसरे दिन बड़ी ने छोटी से कहा कि देख कल रात तो मैं अपने पिता के पास सोई सो आज भी रात को

हमें उसको दाख-मधु पिलायें तब तू जाकर उसके साथ सोना कि हम अपने पिता के द्वारा वंश उत्पन्न करें ।३५। सो उन्होंने उस दिन भी रात के समय अपने पिता को दाख-मधु पिलाया और छोटी बेटी उसके पास जाकर लेट गई। पर न उसको उसके भी सोने उठने के समय का ज्ञान था ।३६। इस प्रकार से लूत की दोनों बेटियाँ अपने पिता से गर्भवती हुयीं। (तौरात उत्पत्ति १९।३०)

इस कथा को तौरात में देने से क्या यह स्पष्ट नहीं है कि इसके मानने वालों से बाप बेटी के व्यभिचार को पाप नहीं माना जाता है। यदि पाप माना जाता तो कुरान में इसकी निन्दा अवश्य की जाती जो नहीं की गई है तौरात, जबूर, इञ्जील और कुरान मुसलमानों को कुरान में खुदाई किताबों के रूप में सर्वथा मान्य है।

नोट—बाइबिल में कुरैन्थियो ६ में बाप बेटी के व्यभिचार व विवाह को उचित माना है।

ह० मौहम्मद की बीबियों पर बदकारी का खुदाई लाँछन

(अरबी खुदा ने कहा) "ऐ पैगम्बर की बीबियो ! तुममें से कोई जाहिरा बदकारी करेगी उसके लिए दोहरी सजा दी जाएगी। और अल्लाह के नजदीक यह मामूली बात है।"

कुरान पा० २२ सू० अहजाव रु० ४ अ० ३०।

समीक्षा—इस आयत ऐसा लगता है कि पैगम्बर की बीबियां बदकार (बद चलन) हो गई होंगी और पैगम्बर साहब से उनकी डाई रहती होगी। आपस में नहीं पटती होगी। तभी पैगम्बर के दोस्त अरबी खुदा को बीबियों को डांटना पड़ा था कि वे जाहिरा बदकारी छोड़ दें वरना खुदा उनको दण्ड देगा। 'मौहम्मद साहब की भी

बीबियां १२ तो निकाही ही थीं, उनके अलावा बिना निकाही वे लौंडियां भी अनेक थीं। हमारे विचार से कुरान की यह आयत उनके गौरव पर धब्बा लगाती है और बताती है कि वे अपनी औरतों को समान रूप से हर तरह से खुशी नहीं रख पाते थे परिणामतः वे बदकार बन गई थीं। अरबी खुदा भी ह० मुहम्मद साहब के परिवार में एक मैनेजर के रूप में परिवार व बीबियों के झगड़ों का प्रबन्धक बना रहता था। यह काम खुदा से ज्यादा अच्छी तरह कोई और नही कर सकता था। सच्चा दोस्त वही होता है जो वक्त पर अपने दोस्त के काम आवे।

कयामत का फैसला खुदा किताबें देखकर करेगा

(कयामत के दिन) जमीन अपने परवर्दिगार के नूर से चमक उठेगी और किताबें रख दी जावेंगी और उनमें पैगम्बर गवाह हाजिर किए जायेंगे और उनमें इन्साफ के साथ फैसला कर दिया जाएगा और उन पर जुल्म न होगा।" ६९। कु पा० २४ सू० जुमर रु० ७।

समीक्षा—खुदा की कचहरी हमारे तहसीलदार की अदालत की तरह होगी। फौजदारी व दीवानी की किताबें देखकर फैसले होगे। सरकारी गवाह के रूप में पैगम्बर लोग शहादतें देंगे। यदि किताबें खो जावें तो फैसले धूल में मिल जावेंगे। बेचारा खुदा भी किताबों का मुहताज होगा। कानून सभी को याद नहीं होते हैं, खुदा को भी याद नहीं होंगे इसमें खुदा का भी ज्यादा दोष नहीं होगा।

अरबी खुदा के सिर्फ दो हाथ हैं

"खुदा के दोनों हाथ फैले हुए हैं, जिस तरह चाहता है खर्च करता है।" कु० पा० २ सू० मायदा रु० ९ आ० ६४।

समीक्षा—इन्सान की तरह ही खुदा मियाँ के भी सिर्फ दो ही हाथ हैं। उसने उनसे पूरी ताकत लगाकर आसमान को बनाया था ऐसा उसका दावा है। जब कि आसमान बिना बना हुआ शून्य स्थान है जिसमें कुछ भी नही बना है। आसमान हाथों से बनाना भी खुदाई गल्प रही है। खुदा ने कुरान सूरते बकर रु० १४ आ० ११७ में दावा किया है "(खुदा) जब किसी काम का करना ठान लेता है तो बस उसके लिए फरमा देता है कि 'हो' और वह हो जाता है।"

स्पष्ट है कि खुदा दुनियाँ बनाते वक्त 'हो' कहकर बनाने का नुस्खा भूल गया था वरना उसे अपने दोनों हाथों से ८ दिन तक कड़ी महनत न करनी पड़ती।

खुदा से भी बडी चीजें

"कोई खुदा के बराबर नहीं है।"

कु०पा० ३० सू० इखलास आ० ४।

समीक्षा—यह शायद ठीक हो कि अरबी खुदा के बराबर कोई दूसरी चीज न हो। पर दो चीजें खुदा से जरूर बड़ी हैं। इसे कोई काट नहीं सकता है। एक तो आसमान खुदा से बड़ा है क्योंकि खुदा और उसका तख्त आसमान में थोड़ी सी जगह में रहते हैं। दूसरे वह अर्श (तख्त) भी खुदा से बड़ा होना चाहिए तभी खुदा उस पर बैठ सकेगा वरना खुदा का शरीर इधर उधर लटकता रहेगा। तीसरी बात यह भी ठीक ही है कि तख्त खुदा की उम्र के बराबर होगा। अगर खुदा से पहिले का होगा तो उम्र में खुदा से बड़ा साबित हो जावेगा। आसमान भी उससे पहिले का होगा, वरना उसके पैदा होने से पहिले खुदा कहां रहता था? यदि तख्त बाद को बना था तो उसके बनने तक खुदा आराम किस पर बैठ या लेटकर करता था,

यह प्रश्न पैदा हो जावेंगे ? मौलवी लोग इन सवालों का जबाव देवें।

खुदा क्या २ लिखता

"हम मुसलमानों के नाम लिख लेते हैं।"

कु०पा० ६ सू० आराफ आ० १५६ रु० १६।

"खुदा लोगों की बकवाद को लिख लेता है।"

कु०पा० ४ सू० आल इमरान आ० १८१।

"जैसी जैसी सलाह रात को करते है खुदा लिखता जाता है।"

सू० निसा आ० ८१ रु० ११।

"जो कुछ यह बकता है हम लिख लेते हैं।"

७६। कु०पा० १६ रु० ५ सू० मरियम।

"हम मुर्दों को जिलाते हैं और जो आगे भेज चुके हैं उसकी निशानी हम लिख रहे हैं और हमने हर चीज खुली किताब में लिख ली है।" कु०पा० २२ सू० यासीन आ० १२।।

"यह बड़ी कद्र का कुरान है और छिपी किताबों में लिखा हुआ है।" ७८। कु० सू० वाकिया।

"कुकर्मी लोगों के कर्म रोजनामचा और कैदियों के रजिस्टर में हैं। तू क्या समझे कैदियों का रजिस्टर क्या चीज है। वह किताब है जिसकी खानापूरी होती रहती है।७।८।६। अच्छे लोगों का कर्मलेखा बड़े रुतवे वाले लोगों के रजिस्टर में है जिसकी खानापूरी होती रहती है।१८।१६।२०। कु०पा० ३० सू० ततफीफ।।

समीक्षा—अरबी अल्लाह मियां ने एक असली कुरान अपने पास लिखकर रख लिया है और मौजूदा कुरान उसी में से सरल करके उतारा गया है। वह हर आदमी के भले बुरे कर्म रोजाना रजिस्टरों

में लिखना रहता है ताकि फैसले के दिन उससे भूल न हो जावे। आखिर इतनी बड़ी दुनियां की हर बात को बेचारा कहां तक याद रख सकता है। जो मौलाना अपने खुदा को सब कुछ जानने वाला बताते हैं वह भूल करते हैं।

खुदा सिर्फ चेलो को ही याद करेगा

(खुदा ने कहा) "तो तुम मेरी याद में लगे रहो कि मैं तुम्हें याद करूँगा और मेरा अहसान मानते रहो....।"

कु०पा० २ सू० बकर रु० १८ आ० १५२॥

समीक्षा खुदा सबको याद नहीं करेगा, सिर्फ अपने चेलों को ही याद किया करेगा वह भी जब जरूरत होगी तब। वरना उनको भी भूल जावेगा। शायद याद भी उसे उनके नामों को अपना रजिस्टर देखकर आवेगी अरबी खुदा सिर्फ अपने मुस्लिम चेलों का ही खुदा था, सारी दुनियां के लोगों से उसे मतलब नहीं था।

अपनी पूजा का भूंखा अल्लाह मियां

"और मैंने जिन्नों और आदमियों को इसी मतलब से पैदा किया है कि हमारी पूजा करें।५६। और मैं उनसे रोजी नहीं चाहता और न यह चाहता हूं कि मुझे खाना खिलावें"

५७। कु०पा० २७ सू० जारियात रु० ३॥

समीक्षा—खुदा का यह दावा झूंठा है। यदि सच्चा होता तो काफिरों, नास्तिकों, पागलों, बे-अक्लों को खुदा पैदा ही न करता जो खुदा की कभी पूजा नहीं करते है। खुदा को अपनी पूजा का इतना शौक था कि दुनियां बनाने का बखेड़ा केवल अपनी पूजा कराने के लिए पैदा कर बैठा। किसी को शराब का शौक होता है, किसी को अपनी खुशामद कराने में मजा आता है तो अरबी खुदा को अपनी पूजा

कराने का ही शौक था, चाहे लोग उसे रोटी खिलायें या नहीं इसकी उसे कोई परवाह नहीं है।

खुदा ने औरतें क्यों पैदा की हैं

"और उसके चमत्कारों में से एक यह है कि उसने तुम्हारे लिए तुम्हारे बीच औरतें पैदा कीं कि तुमको उनके पास चैन मिले और तुममें प्यार और प्रेम पैदा किया। इस मामले में समझ वालों के लिए चमत्कार है।" २१ कु०पा० २१ सू० रुम रु० ३।

समीक्षा—नर और मादा के रूप में सारी सृष्टि बनी है। पशु-पक्षी कीड़े मकोड़े मच्छर वृक्ष वनस्पति आदि सभी में दोनों प्रकार की सृष्टि है जिससे नए बीज का निर्माण होकर सम्पूर्ण सृष्टि का क्रम चालू रहता है। केवल मनुष्य जाति में ही नारी की उत्पत्ति नहीं है। अरबी खुदा को इस सृष्टि क्रम का भी पता नहीं था, वरना केवल मर्दों की अय्याशी के ही उद्देश्य से औरतों की पैदायश की बात न लिखता।

लोगों को खुदा ने क्यों गुमराह किया है

(खुदा ने कहा) "हम चाहते तो हर आदमी को उसकी राह की सूझ देते, मगर हमारी बात पूरी होती है कि जिन्न और आदमी सबसे हम नरक को भर देंगे।" कु०पा० २१ सू० सज्दह आ० १३।

समीक्षा—खुदा ने सू० जारियात आ० ५७ में कहा है कि हमने इन्सान और जिन्नों को अपनी पूजा कराने के वास्ते पैदा किया है, पर यहां वह कहता है कि हमने दोनों को केवल इस लिए पैदा किया है ताकि हम उनसे दोजख को भर सकें। दोनों परस्पर विरोधी हैं। पता नहीं अरबी खुदा को दोजख में प्राणियों को भूनने में क्यों मजा आता है, उनकी खुशहाली से वह क्यों जलता है। यदि दोजख खाली

पड़ी रहे तो खुदा की शान में क्या बट्टा आ जावेगा। अपनी इसी गलत कसम को पूरी करने के लिए ही उसने लोगों को गुमराह किया है, दोष इन्सान का नहीं है, खुदा ही दोषी व मुजरिम है।

मियां किसी मियाँ को न मारे गैरों को मारे

"किसी ईमान वाले को जायज नहीं कि ईमान वाले को मार डाले।९१। जो मुसलमान को जान बूझ कर मार डाले तो उसकी सजा दोजख है।" ९२। सू० निसा।

समीक्षा—अरबी खुदा कोई कठमुल्ला मुसलमान था और घोर तास्सुबी भी था गैर मुसलमानों को कत्ल कराने में खुश होता था और उसके लिए मुसलमानों को उकसाता था। क्या ऐसे गलत बे-इन्साफ खुदा को कोई भला आदमी दुनियां का परवर्दिगार साबित कर सकेगा जो मुसलमानों के हाथ बिका हुआ था? कुरान की यह आयत दुनियां में अत्याचार फैलाने वाली है।

पाक होने का विचित्र इस्लामी तरीका

"हां रास्ता चले जा रहे हो और अगर तुम बीमार हो या मुसाफिर या तुममें से कोई पाखाने से आवे या स्त्री प्रसंग करके आया हो और तुमको पानी न मिल सके तो पाक मिट्टी लेकर मुँह और हाथ पर मल लो। अल्लाह माफ करने वाला बख्शने वाला है।"

४३। सू० निसा। व मायदा आ० ६।

समीक्षा—क्या इसी तरह यदि मुँह व हाथ गन्दे हों और पानी न मिले तो मर्द औरतें जो मुसलमान हों वे अपनी मूत्रेन्द्रियों और गुदेन्द्रियों पर धीरे २ हाथ फेर लिया करें तो उनके मुँह पवित्र हो जावेंगे? गुदा व मूत्रेन्द्रियों की गन्दगी मुँह पर मिट्टी मलने से कैसे मिटेगी, कोई पढ़ा लिखा मुल्लाह इसे खुलासा करे। यह तो गन्दे अंगों की सफाई से ही मिटेगी जब भी पानी मिले।

खुदा ने मदद मांगी

कुरान में खुदा ने जोरदार शब्दों में पुकार कर मांग की है कि –

"और जो अल्लाह की मदद करेगा अल्लाह अवश्य उसकी मदद करेगा। अल्लाह जबर्दस्त शक्तिशाली है।"

कु०पा० १७ सू० हज्ज आ० ४० रु० ५।

समीक्षा—मुसीबत सभी पर आ सकती है और उस वक्त मुसीबतजदा की मदद जरूर करनी चाहिए। मुस्लिम देशों को अपनी फौजों से तथा मुसलमानों को अपने धन से खुदा की मदद करनी चाहिए। बदले में कभी खुदा भी उनकी मदद जरूर करेगा, ऐसा उसने वायदा कर दिया है। यदि खुदा हमसे मांग करे तो आर्य समाज उसकी मदद को तैयार मिलेगी, पर उसे पहिले यज्ञ पर बैठ कर आर्य समाजी बनना पड़ेगा, यह शर्त होगी।

कुरान में जन्नत व दोजख का वर्णन

खुदाई धोखा

खुदा ने कहा "जब तक आसमान और जमीन (कायम) हैं वे हमेशा उसी में रहेंगे।" कु० सूरे हूद आ० १०७।

"(कयामत के दिन) हम आसमान को इस तरह लपेटेंगे जैसे तूमार में कागज लपेटते हैं।" कु० सू० अम्बिया १०४।

(कयामत के दिन) आसमान की खाल खींची जावेगी।"

कु० सू० तकवीर आ० ११।

"आसमान लपेटे हुए उसके दाहिने हाथ में होंगे।"

६७। कु० सू० जुमर।

"और जब जमीन तान दी जावेगी।३। और जो कुछ उसमें है उसे बाहर डाल देगी और खाली हो जावेगी।४। और अपने परवदिगार की बात सुनेगी....।" ५ कु० सू० इन्शिकाक।

समीक्षा—ऊपर की खुदा की बातों से स्पष्ट है कि कयामत के दिन आसमान कागज की तरह खुदा अपने हाथ में लपेट लेगा और जमीन का जर्रा अलग २ हो जावेगा अर्थात् जमीन नाम की कोई चीज बाकी न रहेगी अर्थात् आसमान व जमीन खत्म हो जावेंगे। कुरान में लिखा है कि दोजख व जन्नत में लोग कयामत को हमेशा के लिए भेजे जावेंगे। इधर खुदा कहता है कि जमीन आसमान कयामत के दिन खत्म हो जावेंगे तो स्पष्ट है कि कोई भी आदमी जन्नत दोजख में जा ही नहीं सकेगा। लोगों के दुःख सुख भोगने की म्याद जमीन आसमान के खात्मे के साथ कयामत के दिन ही खत्म हो जावेगी। तब सारे कुरान में जन्नत दोजख का प्रलोभन व भय दिखा कर ना समझ मुसलमानों को अरबी खुदा ने उनको इस्लाम में लाने के लिए हथकन्डे के रूप में पेश करके कोरा धोखा दिया है। इस प्रकार का वर्णन कुरान के गौरव को नष्ट करता है। शून्य आसमान का लपेटना व जमीन का खाली होना बताना साबित करता है कि कुरान का लेखक पढ़ा लिखा नहीं था।

मुसलमानों में ७३ में ७२ फिरके दोजखी हैं

हजरत मोहम्मद साहब ने कहा था "मेरी उम्मत के ७३ फिरके होंगे जिनमें एक जन्नती होगा। और ७२ दोजख में जावेंगे।"

(मिश्कात किताबुल ईमान जि० १ हदीस १६३)

समीक्षा तिहत्तर में से बहत्तर मुसलमान दोजख में जावेंगे तब कोई भी मुसलमान जन्नत में जाने का पक्की बात नहीं कह सकता है क्योंकि जन्नती फिरके की पहचान नहीं बताई है। यदि हम कहें कि सारे इमाम-मुल्ला-मौलवी सुन्नी व शिया मुसलमान दोजखी हैं तो गलत नहीं होगा।

कुरान केवल पुरानी किताबों की तफसील है

"यह किताब (कुरान) इस किस्म की नहीं कि खुदा के सिवाय कोई इसे अपनी तरफ से बना लावे, बल्कि जो किताबें (तौरात, इञ्जील जबूर आदि) इससे पहिले की हैं उनकी तस्दीक करती है और उन्हीं की तफसील (व्याख्या) है। इसमें सन्देह नहीं कि यह खुदा की उतारी हुई है।" कुरान पारा ११ सूरे यूनिस रकू ५ आ० ३७।

समीक्षा—इसमें खुले शब्दों में घोषणा की गई है कि कुरान में कोई नई बात या नया उपदेश नहीं दिया गया है बल्कि यह तो सिर्फ पुरानी किताबों की ही तफसील है। इससे कुरान की प्रतिष्ठा नष्ट होती है तथा पुरानी किताबों की इज्जत बढ़ जाती है। तो जब यदि कुरान न भी बनाया जाता तो भी कोई कमी नहीं आती। क्योंकि पुरानी किताबें पहिले ही से मौजूद थीं और बड़ी सरल भाषा में हैं जिन्हें हर कोई समझ सकता है। यही नहीं बल्कि इस कुरान में बहुत से ऐसे स्थल भी हैं जो पुरानी किताबों के खिलाफ हैं अनेक ऐसे भी हैं जो उनमें हैं और इसमें नहीं हैं। अनेक इसमें हैं और उनमें नहीं हैं। अतः यह कहना भी सही नहीं है कि कुरान पुरानी किताबों की तफसील है। तफसील में वह सभी कुछ होना चाहिए जो पुरानी किताबों में दिया है। उस विषय में 'कुरान की छानबीन' पुस्तक देखने योग्य है।

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
पु परिग्रहण क्रमांक 5328
दयानन्द महिला महा

जनवरी सन् १९८५ से चालू

बौद्धमत का भण्डाफोड़	३.००
हिन्दू मन्दिरों की लूट	१५.००
कुरान की छानबीन	१२.००
कुरान प्रकाश	७.००
गीता विवेचन	७.००
भागवत समीक्षा	७.००
बाइबिल दर्पण	६.००
कुरान पर १७६ प्रश्न	३.००
असत्य पर सत्य की विजय	५.५०
मौलवी हार गया	२.५०
ईश्वर सिद्धि	५.००
वैदिक यज्ञ विज्ञान	३.५०
जैन मत समीक्षा	५.००
मुनि समाज मुखमर्दन	४.५०
अवतार रहस्य	३.५०
मूर्ति पूजा खण्डन	४.५०
टोंक क शास्त्रार्थ	३.२५
माता पुत्री का सम्वाद	३.५०
भारतीय शिष्टाचार	२.५०
शिवलिंग पूजा क्यों ?	४.५०
अद्वैतवाद मीमांसा	३.००
प्रार्थना भजन भास्कर	३.५०
यजुर्वेद अ० ४० सव्याख्या	१.२०
यजुर्वेद अ० ३१ सव्याख्या	५.५०
वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है	२.००
पुराण किसने बनाये ?	३.००
माधवाचार्य को डबल उत्तर	२.२५
तुलसी और शालिगराम	.५०
दुर्गा पर नर बलि	.६०
कुरान और अन्य मजहब	.८०
स्वर्ग विवेचन	.७५
हनुमान जी बन्दर नहीं थ	.६०
कुरान खुदाई कैसे	.६५
शैतान की कहानी	.५०
कुरान में परस्पर विरोधी स्थल	.३०
खुदा का रोजनामचा	.३०

डा० श्रीराम आर्य प्रणीत ग्रन्थ

पौराणिक मुख चपेटिका	.५०
पौराणिक गप्प दीपिका	१.५०
इस्लाम दर्शन	१.५०
कबीर मत गर्वमर्दन	१.५०
ब्रह्माकुमारी मत खण्डन	१.००
स.प्र. की छीछालेदर का उत्तर	२.००
महान पुरुष कैसे बनते हैं	३.५०
सव्याख्या विवाह पद्धति	४.२५
इस्लाम में नारी की दुर्गति	१.२५
कुरान में पुर्नजन्म	.८०
कुरान में विज्ञान विरुद्ध स्थल	.८०
चोटी ३० पैसे, जनेऊ ६० पैसे	
कुरान के विचारणीय स्थल	२.७५
पुराणों के कृष्ण	१.००
शिव जी के चार विलक्षण बेटे	१.००
मृतक श्राद्ध खण्डन	.७५
विभिन्न मतों में ईश्वर	.६५
गीता पर ४२ प्रश्न	.७५
शास्त्रार्थ के चेलेंज का उत्तर	१.००
पौराणिक कीर्तन पाखण्ड है	.७५
बाइबिल पर सप्रमाण ३१ प्रश्न	.५०
अर्थ सहित वैदिक संध्या	.७५
सनातन धर्म में नियोग व्यवस्था	.७५
नारी पर मजहबी अत्याचार	.५०
ईसामत का पोल खाता	.५०
नृसिंह अवतार वध	.३०
मेरठ का जंगली कुत्ता	४.००
अवतारवाद पर ३१ प्रश्न	.३०
ईसा मुक्तिदाता नहीं था	.३०
ईसा और मरियम	.३०
मूर्ति पूजा पर ३१ प्रश्न	.३०
ईसाई मत का पोलखाता	.३०
मतक श्राद्ध पर ३१ प्रश्न	.३०
तम्बाकू में विष,	.३०
अण्डा और मांस में विष	.३०

पता—वैदिक साहित्य प्रकाशन, कासगंज (एटा) उ० प्र० भारतवर्ष